आर्य सम
वर्गांक
पुस्तकांक
क्रमांक

All Rights Rese...
सर्वाधिकार स्वाधीन है।

हिन्दी कुर्आन्

सटीक

قرآن مجید

अनुवादक

रामचन्द्र देहलवी।

मूल्य:— पाँच आने।

...र
...दिक
...आक्षेपों
...ो एकत्रित
...न्तया वहां के

आर्य स
समाज
पुस्तकाल
क्रमांक

ॐ

नमः परमात्मने।

भूमिका

मैं ने आर्य्य-समाज की यदि अभी तक कोई सेवा की थी तो वह केवल मौखिक व्याख्यानों और शास्त्रार्थों द्वारा, लेख द्वारा नहीं। इसके दो कारण थे एक तो यह कि मुझे अवकाश ही न मिला; दूसरे यह कि जब तक किसी विषय में पूरा अनुभव न हो जावे और उसकी आवश्यकता न प्रतीत हो तब तक उस पर लेखनी उठाना उचित नहीं। इस कारण मैं चुप रहा और लोगों के कहने का कुछ विचार नहीं किया। परंतु जब तक़ाज़े बहुत बढ़ गए और मुझे भी पता लग गया कि जिस वस्तु की लोग इच्छा कर रहे हैं वह सच्ची इच्छा है और मैं उसे कर भी सकता हूं, तो मैं ने अपने मन में दो काम करने की ठानली, एक तो क़ुरआन् का हिंदी अनुवाद जो आज तक कहीं नहीं हुआ है और दूसरे ईसाई और यवनों के लग भग सब आक्षेपों के उत्तर जो वह आज कल वैदिक धर्म पर करते हैं। मेरा विचार पहले वैदिकधर्म पर अन्य मतावलम्बियों के आक्षेपों का उत्तर लिखने का था और मैं ने उसके लिये बहुत कुछ सामग्री भी एकत्रित करली थी परन्तु जब मैं मुम्बई गुरुकुल के उत्सव पर गया तो सामान्यतया वहां के

आर्य्य पुरुषों ने और विशेषतः हमारे माननीय राज्य-रत्न श्री पं० आत्माराम जी एज्युकेशनल् इन्सपेक्टर बड़ौदा स्टेट ने कुर्आन के हिंदी अनुवाद को जल्दी से लिख डालने की इच्छा प्रकट की, सो मैं ने आते ही इस कार्य को आरम्भ कर दिया। मैं इस अनुवाद को सिपारे के रूप में निकालना चाहता हूं जो कि ३० होंगे। यह पहला सिपारा है जो मैंने आपकी भेट किया है, इसी प्रकार के २९ और होंगे। मुझे आशा है कि यह उस कमी को पूरा करेगा जिसे उपदेशक महाशय अपने व्याख्यानों और मुनाज़िरों में बहुधा अनुभव किया करते थे।

वैसे तो सचाई एक ऐसी वस्तु है जो साधारण शब्दों में वर्णन की हुई भी कुछ कम प्रभाव नहीं डालती तो भी अन्य मतावलम्बियों के मत की समीक्षा करते समय यदि उनके प्रमाणों को हूबहू उन्हीं की भाषा में सुनाकर फिर उनपर दोषारोपण किया जावे तो उसका कुछ और ही प्रभाव पड़ता है और प्रतिवादी को झूटे बहाने बनाने का अवसर ही नहीं मिलता।

इस उद्योग से एक यह भी लाभ होगा कि बहुत से भाई जो कुरान की शिक्षा से अनभिज्ञ थे और अभिज्ञ होना चाहते थे परंतु उर्दू न जानने के कारण इस को पढ़ नहीं सकते थे उनको अच्छा अवसर मिल जावेगा कि इसको पढ़कर इस्लाम के वास्तविक रूप का ज्ञान प्राप्त करले।

क्योंकि मुसल्मान लोग अपनी कुर्आन् को शुद्ध और स्पष्ट पढ़ने का विशेष ध्यान रखते हैं तो वह यह भी पसंद नहीं करते कि अन्य भी इसको अशुद्ध पढ़ें इस लिये बहुत अवसरों पर वह इसी मिस से व्याख्यान या शास्त्रार्थ में कोलाहल मचा देते हैं कि "तुमने ग़लत पढ़ा ग़लत पढ़ा" और तत्वकी बात को जिसकी ओर विशेष ध्यान देना चाहिए था खो देते हैं जिस से व्याख्याता या शास्त्रार्थ कर्ता को बड़ा दुःखित और लज्जित होना पड़ता है। इसलिये मैं ने इस बातको ध्यान में रखते हुए कुर्आन् की अरबी आयतों का देवनागरी अक्षरों में उल्था बड़ी ही सावधानी से किया है और मुझे पूर्ण आशा है कि यदि पाठकोंने उन ७ नियमों को जो मैं ने पुस्तक के आरम्भ में ही दे दिये हैं भली प्रकार ध्यान में रखकर आयतोंको याद किया तो कोई यह न पहचान सकेगा कि इस पुरुष ने अरबी की कुर्आन् से वह आयतें याद की हैं या हिंदी की से।

अब रहा कुर्आन का आर्य्यानुवाद वह सरल आर्य भाषा में कर दिया है जिस से हर प्रकार की योग्यता का पुरुष इस को समझ सके। विशेष बड़े शब्दों का प्रयोग यथा सम्भव छोड़ दिया गया है। कोष्ठक में जो कुछ लिखा गया है वह मूल में नहीं है यदि ऐसा न किया जाता तो बात का अच्छी प्रकार समझ में आना दुस्तर था।

इस में एक बात विशेष है जो आयतों की गिनती कर दी गई है। इससे प्रमाण के ढूंढने और बताने में बड़ी सुविधा हो जावेगी।

अंत में मैं यह जानता हुआ कि मनुष्य अल्पज्ञ है और भूल कर सकता है यदि मुझसे कोई भूल हो गई हो या त्रुटि रह गई हो तो पाठक मुझे क्षमा करेंगे, सुझाने पर उसको निकाल दिया जावेगा।

यदि कोई सज्जन कुछ ऐसी बात सुझावें जो इस पुस्तक की किसी त्रुटि को पूरा करे वा इसको और उपयोगी बनावे तो मैं उनका हृदय से कृतज्ञ होता हुआ दूसरे सिपारे में निकालने योग्य को निकाल और डालने योग्यको डाल दूंगा। इस कारण दूसरा सिपारा कुछ देरसे निकलेगा।

वैदिकधर्म का तुच्छ सेवक
रामचंद्र देहलवी।

ता० १ मई सन् १९२४

सप्त संकेत

अर्थात्

कुरान की आयतों को शुद्ध और स्पष्ट

पढ़ने के नियम

१ जो अक्षर सस्वर हो उस को पूर्णतया स स्वर और हलन्त को हलन्त ही उच्चारण करना चाहिये

२ जिस शब्द के अक्षरों को " – " इस चिह्न से जुदा २ लिखा गया है वह एक ही शब्द है अनेक नहीं, ऐसा करने का कारण केवल यह है कि उन अक्षरों का उच्चारण वर्ण माला के अक्षरों की भांति पृथक् पृथक् किया जावे

३ जिन शब्दों के अन्त में ह्रस्व स्वर " अ, इ, उ " हों या किसी भी व्यञ्जन पर इन की मात्रा हो तो उन को क्रम से कुछ २ " आ, ए, ओ " की भांति पढ़ना चाहिये अर्थात् ह्रस्व और दीर्घ दोनों स्वरों का मध्य-वर्ती उच्चारण उच्चरित होना चाहिये

४ प्रत्येक आयत के अन्तिम शब्द को सर्वत्र, और उस के किसी टुकड़े के अंतिम शब्द को केवल उस समय जब प्रमाण रूप से मौखिक प्रस्तुत करना हो निम्नोक्त नियमों के साथ पढ़ना चाहिये

(क) (उपर्युक्त अन्तिम शब्दों का) अन्तिम स्वर यदि ह्रस्व हो और उसके परे कोई अक्षर न हो तो पाठ करते समय उस स्वर का लोप होगा जैसे
" सु-फ़-हा३अ, सु-फ़-हा३इ, सु-फ़-हा३उ " तीनों को
सु-फ़-हा३ या
" रही-म रही-मि, रही-मु " तीनों को " रहीम् " पढ़ना चाहिये

(ख) यदि " उन् और " इन् " के वज़न पर अन्त होता हो तो " उन् और इन् " का लोप होगा जैसे:— " अ़ज़ाबुन् व अ़ज़ाबिन् " दोनों को " अ़ज़ाब् " ही पढ़ना चाहिए

(ग) यदि " अन् " के वज़न का अन्त होता हो तो इस के स्थान में दीर्घ " आ " की मात्रा का उच्चारण किया जावे जैसे :— " अज़ाबन् " को " अज़ाबा " पढ़ना चाहिये

(घ) यदि अंतिम अक्षर " तन्, तिन् और तुन् " हों तो इन के स्थान में : विसर्ग पढ़ा जावे जैसे :— "ग़िशावतुन् " को " ग़िशावः " पढ़ना चाहिये

(ङ) परंतु " इन्, अन्, बिन्, मिन्, मन् और कुन् " इत्यादि अरबी में स्वतंत्र शब्द हैं सो ये और इन जैसे केवल दो अक्षरों वाले अन्य भी इस नियम से बाहर हैं, इन नियमों से विलक्षण जहां कहीं कोई-बात आवेगी उस को वहीं खोल दिया जावेगा

५ जहां किसी शब्द के बीच में या अन्त में ३ का अङ्क आवे उन के पहले वाले अक्षर को प्लु त पढ़ना चाहिये

६ जहां कहीं विराम का चिह्न " , " हो उस का भी ध्यान रखना चाहिये नहीं तो बात बेजोड़ होजावेगी ; जहां कहीं " अनिवार्य विराम " लिखा हो उस को भी आयत के तुल्य पढ़ना चाहिये (अर्थात (४) चौथा नियम काम में लाना चाहिये)

७ इस सिपारे की बहुत सी आयतों के अन्त में जिन शब्दों या अक्षरों को कोष्ठक में लिख दिया है वह नियम (४) को सुविधा से समझ जाने के हेतु किया गया है ।

हिन्दी कुर्आन्

सटीक

" अलिफ़् लाम्मीम् " का पारा

सम्पादक—
पण्डित रामचन्द्र
आर्योपदेशक, देहलवी ।

मुद्रक—
नारायणप्रसाद बेताब
बेताब प्रिंटिंग वर्क्स देहली ।

ओ३म् दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः। अश्रद्धा मनृतेऽदधाच्छ्रद्धा सत्ये प्रजापतिः ॥

भाषार्थ

प्रजापति परमेश्वर ने धर्म और अधर्म के प्रसिद्ध अर्थात् जो बाहर की चेष्टा के साथ सम्बंध रखता है और अप्रसिद्ध अर्थात् जो आत्मा के साथ सम्बंध रखता है दोनों लक्षणों को अपनी सर्वज्ञ विद्या से पृथक् पृथक् कर दिया है। इस लिए सब मनुष्यों को अनृत अर्थात् अधर्म और अन्याय में अश्रद्धा रखनी चाहिए और सत्य अर्थात् वेदशास्त्र प्रतिपादित प्रत्यक्षादि प्रमाणों द्वारा सुपरीक्षित पक्षपात रहित न्याय रूप धर्म में श्रद्धा रखनी चाहिए अर्थात् उस से प्रीति करके उसी पर चलना चाहिए।

(यजु० अ० १९ मं० ७७)

॥ क़ुर्आन् आरम्भ ॥

सूरए फ़ातिहा (आरम्भिक)

मक्के में उतरी, इस की ७ आयतें हैं।

पहला रुकू

१ बिस्मिल्ला-हि र्रह्मा-नि र्रही-मि (म्)	१ अल्लाह* के नाम से (जो) अत्यन्त दयालु और कृपालु (है,)
२ अल्हम्दु लिल्ला-हि रब्बिल् आ-ल-मी-न (न)	२ सर्व प्रकार की स्तुति अल्ला ही के लिये है (जो) सर्व जगत् का (रब अथवा रवि) पालन कर्ता (है,)
३ अर्रह्मा-निर्रही-मि (म्)	३ अत्यन्त कृपालु, दयालु
४ मा-लिकि यौमिद्दी-नि (न)	४ स्वामी न्याय के दिनका
५ ईय्या-क नअ्बुदु व ईय्या-क नस्त ईनु (न)	५ तेरी ही हम उपासना करते हैं और तुझ ही से सहायता मांगते हैं
६ इह्दि नस्सिरात्ल्मुस्तक़ी-म (म्)	६ हम को सीधा रस्ता दिखा
७ सिरात्ल्लज़ी-न अन्अम्-त अलैहिम् ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अलैहिम् व लज़्ज़ा-ल्ली-न (न)	७ उन लोगोंका रस्ता जिन पर तूने कृपा की, न उन का जिन पर तेरा कोप-पात हुआ, और न रस्ते से भटके हुओं का,

सूरए बक़र [गाय]

मदीने में उतरी, इस की २८६ आयतें हैं और ४० रुकू।

पहला रुकू आयत ७

१ बिस्मिल्ला-हि र्रह्मा-नि र्रही-मि (म्) अलिफ़् ला३म्मी३म् †	१ अल्ला के नाम से (जो) अत्यन्त कृपालु और दयालु (है,)

* अल्लाह का अर्थ मैंने अल्ला किया है जो संस्कृत भाषा का शब्द है और उसका अर्थ माता, सब का धारण और पालन करने हारा और परमात्म देवता है अरब वालों ने इसको यहीं से लिया प्रतीत होता है।

† इस प्रकार के अक्षर जो क़ुर्आन् में किसी २ सूरत के आरम्भ में आए हैं "मुक़त्त्आत" अर्थात् पृथक २ किये हुए या काटे हुए कहलाते हैं और वर्णमाला के अक्षरों की तरह पृथक २ पढ़े जाते हैं और आकाशवाणी के गुप्त रहस्य में है जिनके अर्थ ईश्वर ने किसी कारण से प्रगट नहीं किये भाष्य कारों ने जो अर्थ निर्दिष्ट किये हैं वो उनकी अपनी कल्पना है।

२ ज़ा-लिकल् किता-बु लारै-ब, फ़ीहि, हुदंल्लिल् मुत्तक़ी-न (न)	२ यह वह पुस्तक है जिसमें कुछ भी शंका नहीं मार्ग दिखाती है डरवालों को,
३ अल्लज़ी-न योमिनू-न बिल्ग़ैबि व युक़ीमूनस्सला-त व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युनफ़िक़ू-न (न)	३ जो परोक्ष पर विश्वास लाते और नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उनको दे रक्खा है उसमें से व्यय करते
४ वल्लज़ी-न योमिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क, व बिल् आख़िरति हुम् यूक़िनू-न (न)	४ और जो विश्वास करते हैं (उसपर) जो कुछ तुम पर उतरी और जो कुछ उतरी तुझ से पूर्व और वह अंतिम दिनका भी विश्वास रखते हैं,
५ उलाइ-क अला हुदम्मिर्रब्बिहिम्, व उलाइ-क हुमुल् मुफ़्लिहू-न (न	५ यही लोग अपने पालन कर्ता के सीधे मार्ग पर हैं और यही मनोरथ प्राप्त करेंगे
६ इन्नल्लज़ी-न क-फ़-रू सवाउन अलै-हिम् अ-अन्ज़र्तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्हुम् ला योमिनू-न (न)	६ (हे पैग़म्बर) जिन लोगोंने (मुसल्मान होना) अस्वीकार किया उनके लिये समान है कि तुम उनको चाहे भय दिलाओ या न दिलाओ वो न मानेंगे
७ ख़-त-मल्ला-हु अला क़ुलूबिहिम् व अला सम्एहिम्, व अला अब्सा-रिहिम् ग़िशावतुन, व लहुम् अज़ाबुन अज़ीमुन (अज़ीम्)	७ उनके हृदयों पर और उनके कानों पर अल्लाने मुहर छाप लगादी है और उनके नेत्रों पर पर्दा है और उनको बड़ी मार (पड़नी) है,

दूसरा रुकू । आयत १३+७=२०

१ व मिनन्ना-सि मैंयक़ूलु आमन्ना बिल्ला-हि व बिल् यौमिल आख़िरि वमा हुम् बिमोमिनी-न (न)	१ और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो कह देते हैं कि हम अल्ला और न्याय के (अन्तिम) दिन पर विश्वास लाए किन्तु (वास्तव में) वह विश्वास नहीं लाए,
२ युख़ादिऊ़नल्ला-ह वल्लज़ी-न आ-मनू व मा यख़्दऊ़-न इल्ला अनफ़ु-स-हुम् व मा यश्उरू-न (न)	२ (यह लोग) अल्ला को और उन लोगों को जो विश्वास ला चुके हैं धोखा देते हैं और (वास्तव में, धोखा नहीं देते हैं (किसी को) परन्तु अपने आप को, और नहीं समझते,
३ फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुन, फ़ज़ा-दहु मुल्ला-हु म-र-ज़न, व लहुम् अज़ाबु-न अलीमुम् बिमा कानू यक्ज़िबू-न(न)	३ उनके हृदयों में रोग था, अब अल्लाने उनका रोग और भी बढ़ा दिया और उनको दुःख की मार है इस कारण कि मिथ्या भाषण करते थे,
४ व इज़ाक़ी-ल लहुम् ला तुफ़्सिदू	४ और जब उनसे कहा जाता है कि देश में झगड़ा

फ़िल् अर्ज़ि क़ालू इन्नमा नह्नु मुस्लि हू-न (न)	न फैलाओ तो कहते हैं कि हम तो एकता कराने वाले हैं और बस (अन्य कुछ नहीं)
५ अलाइन्नहुम् हुमुल्मुफ़्सिदू-न व ला किल्ला यश्उरू-न (न)	५ सुनो जी ! यही लोग झगड़ालू हैं परन्तु नहीं समझते,
६ व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू कमा आम नन्नासु क़ालू अनोमिनु कमाआमनस्सु फ़-हाउ, अलाइन्नहुम् हुमुस्सु-फ़-हा-उ, व लाकिल्ला यअ्-ल-मू-न (न)	६ और जब इनसे कहा जाता है कि जिस प्रकार अन्य लोग विश्वास ले आए हैं तुम भी विश्वास ले आओ तो कहते हैं कि क्या हम भी (उसी प्रकार) विश्वास ले आवें जिस तरह (अन्य) मूर्ख विश्वास ले आए हैं, सुनो जी ! यही लोग मूर्ख हैं परन्तु नहीं जानते
७ व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आ-म-नू क़ालू आमन्ना, वइज़ा ख़लौ इला शयाती-निहिम्, क़ालू इन्ना म-अ-कुम्, इन्नमा नह्नु मुस्तहज़िऊ-न (न)	७ और जब उन लोगों से मिलते हैं जो विश्वास ला चुके तो कहते हैं हम (भी तो) विश्वास ला चुके हैं और जब एकान्त में अपने शैतानों (दुष्ट साथियों) से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं हम तो सिर्फ़ हंसी करते हैं
८ अल्ला-हु यस्तहज़िउ बिहिम् वयमुद्दुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्-म-हू-न (न)	८ (वास्तव में) अल्ला इन की हंसी उड़ाता है और इनको ढील देता है कि अपनी कुटिलता की भूल भुलइयों में भटकते रहें,
९ उलाइकल्लज़ीनश्त-र वुज़्ज़लाल-त बिल्हुदा, फ़ मा रबिहत् तिजा-रतु हुम् व मा कानू मुहतदी-न (न)	९ यही हैं वो लोग जिन्होंने सुमार्ग के बदले कुमार्ग मोल लिया, सो न तो इनका व्यापार ही लाभप्रद रहा और न सुमार्ग ही पर स्थित रहे,
१० म-स-लुहुम् क-म-सलिल्लज़िस्तौक़-द नारन, फ़ लम्मा अज़ाअत् माहौलहू ज़-ह-बल्ला-हु बिनूरिहिम् व त-र-कहुम् फ़ी ज़ुलुमातिन ला युब्सिरू-न (न)	१० इनकी कहावत उस पुरुष की सी कहावत है जिसने (मनुष्यों के एक समूह में रात्रि के समय) अग्नि जलाई जब उस (पुरुष) के निकट की वस्तुएँ चमक उठीं तो अल्ला ने उन (लोगों की आंखों) की रोशनी नष्ट कर दी और उनको अन्धकार में छोड़ दिया कि उनको कुछ भी नहीं दीखता
११ स्युम्मुम् बुक्मुन उ़मियुन फ़हुम् ला यर्जिऊ-न (न)	११ बहरे, गूंगे, अंधे कि वो फिर(सुमार्ग पर)नहीं आसक्ते
१२ औ कसैयबिम् मिनस्समाइ फ़ीहि ज़ुलुमातुन व र-अ्-दुन व बर्क़ुन, यज् अलू-न अस्बाबिअहुम् फ़ी आज़ानि हिम् मिनस्सवाइक़ि ह-ज़-रल्मौति, बल्ला-हु मुहीतुम् बिल् काफ़िरी-न (न)	१२ या जैसे आकाश की वर्षा कि उसमें अंधकार है और गरज और बिजली, मृत्यु के भय से कड़क के मारे अपने कानों में अंगुलियां ठोंसे लेते हैं, अल्ला इस्लाम स्वीकार न करने वालों को घेरे हुए है

१३ यकादुल बर्क़ु यख़्तफ़ु अब्सा-र हुम् कुल्लमा अज़ाअ-लहुम् मशौ फ़ीहि, व इज़ा अज़्ल-म अलैहिम् क़ामू, व लौ शाअल्ला-हु ल-ज़-ह-ब बिसम्-इ-हिम् व अब्सारिहिम्, इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन क़दीरुन (क़दीर)

१३ समय निकट ही है कि बिजली उनकी दृष्टियों को उचक ले जावे, जब उनके आगे बिजली चमकी तो उसमें कुछ चले और जब उन पर अंधकार छा गया तो खड़े (के खड़े) रह गए और यदि ईश्वर चाहे तो उनके सुनने और देखने की शक्तियां छीन ले निस्संदेह ईश्वर प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखता है

तीसरा रुकू। आयत ९+२०=२९

१ याऐयुहन्ना-सु-अ-बुदू रब्बकुमुल-ल़ज़ी ख़-ल-क़कुम् वल्लज़ी-न मिन क़ब्लि कुम् ल-अल्लकुम् तत्तक़ू-न (न)

१ लोगों ! अपने रबकी उपासना करो जिसने तुमको और उन लोगोंको जो तुमसे पूर्व हो चुके हैं पैदा किया, आश्चर्य नहीं कि तुम विविक बन जाओ

२ अल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल अर्-ज़ फ़िराशन वस्समाअ बिनाअन, व अंज़-ल मिनस्समाइ माअन फ़ अख़-ज बिही मिनस्स-म-रा-ति रिज़्क़ल्लकुम् फ़ ला तज्अलू लिल्लाहि अन्दादन व अन्तुम् तअ-लमू-न (न)

२ जिसने तुम्हारे लिये पृथिवी का बिछौना बनाया और आकाश की छत, और आकाश से पानी बरसा कर उससे तुम्हारे खाने के फल उत्पन्न किए, अतः किसी को अल्ला के तुल्य न बनाओ और तुम तो जानते (बूझते) हो

३ व इन कुन्तुम् फ़ी रैबिम् मिम्मा नज़्ज़ल्ना अला अब्दिना फ़ातू बिसू-रति-म् मिम् मिस्लिही, वद्ऊ शु-ह-दाअ कुम् मिन्दूनिल्ला-हि इन कुन्तुम् स्वादिक़ी-न (न)

३ और यदि तुमको उसमें शंका हो जो (पुस्तक) हमने अपने सेवक पर उतारी है तो इसी जैसी एक सूरत (टुकड़ा) लाओ और ईश्वर के अतिरिक्त अपने अपने सहायकों को भी बुलाओ यदि तुम सच्चे हो,

४ फ़ इल्लम् तफ़्अलू व लन तफ़्अलू फ़त्तक़ुन्नारल्लती वक़ूदुहन्ना-सु वल् हिजा-र-तु, उइद्दत् लिल् काफ़िरी-न(न)

४ जो यदि न कर सको और कदापि न कर सकोगे तो अग्नि से डरो जिसके ईंधन मनुष्य और पाषाण हैं (और वह) काफ़िरों (अविश्वासियों) के लिये तैयार है

५ व बश्शिरिल्लज़ी-न आ-म-नू व अमिलुस्स्वालिहा-ति अन-नलहुम् जन्नातिन तज्री मिन तह्तिहल अन्हा-रु, कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन स-म-रतिर्रिज़्क़न

५ और (ए ! पैगम्बर) जो लोग विश्वास लाए और शुभ कर्म किये उनको शुभ सूचना दे दो कि उनके लिये (स्वर्ग) बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जब उनको उनमें का कोई

क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना मिन्क़ब्लु व उतूबिही मु-त-शाबिहन(मु-त-शाबिहा), वलहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मुत्वह्ह-र-तुंव्व हुम् फ़ीहा ख़ालिदू-न (न)

उनको समानाकृति के ही (मेवे) मिला करेंगे और वहां उनके लिये बीवियां होंगी स्वच्छ पवित्र और वह उनमें सदा रहेंगी

६ इन्नल्ला-ह ला यस्तह्यी ऐंयज़्रि-ब म-स-लम्मा बऊज़तन फ़मा फ़ौक़हा, फ़ अम्मल्लज़ी-न आ-म-नू फ़ यअ-ल-मू-न अन्नहुल् हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम्, व अम्मल्लज़ी-न क-फ़-रू फ़ यक़ूलू-न मा-ज़ा अरादल्ला-हु बिहाज़ा म-स-लन (मसला), युज़िल्लु बिही कसीरन व यह्दी बिही कसीरन (कसीरा), वमा यु-ज़िल्लु बिही इल्लल् फ़ासिक़ी-न (न)

६ अल्ला किसी दृष्टान्त के वर्णन करने में लज्जा नहीं करता (चाहे वह) मच्छर का हो या उससे भी बढ़कर (किसी और तुच्छ वस्तु का) सो जो लोग विश्वास ला चुके हैं वह तो निश्चय रखते हैं कि यह (दृष्टान्त) ठीक है और उनके रब की ओर से (है) और जो अविश्वासी हैं वह कहते हैं कि इस दृष्टान्त से अल्ला को क्या इष्ट था, भटका देता है इससे बहुत सों को और बहुत सों को इससे मार्ग बता देता है परन्तु इससे कुकर्मियों को ही भटकाता है

७ अल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न अह्दल्ला-हि मिम् बअ्दि मीसाक़िही(मीसाक़िः),व यक़्तअू-न मा अ-म-रल्ला-हु बिही ऐंयूस-ल व युफ़्सिदू-न फ़िल् अर्ज़ि, उलाइ-क हुमुल् ख़ासिरू-न (न)

७ जो दृढ़ किये पश्चात् अल्ला का प्रण भंग करते और जिन (सम्बन्धों) के जोड़े रखने की अल्लाने आज्ञा की है उनको तोड़ देते और देश में झगड़ा फैलाते हैं वही घाटे में होंगे

८ कै-फ़ तक्फ़ुरू-न बिल्ला-हि व कुन्तुम् अम्वातन फ़ अह्याकुम् सुम्-म युमी तुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् सुम्-म इलैहि तुर्जऊ-न (न)

८ लोगो ! तुम किस प्रकार अल्ला के अविश्वासी हो सकते हो और (तुम्हारी अवस्था यह है) कि तुम मृतक थे तो उसने तुमको जीवित किया फिर तुमको मारता है फिर जीवित करेगा फिर उसी की ओर फेरे जाओगे

९ हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ लकुम् मा फ़िल अर्ज़ि जमीअन (जमीआ), सुम्मस्तवा इलस्समाइ फ़ सव्वाहुन्-न सब्-अ समावातिन (समावात), वहु-व बिकुल्लि शैइन अलीमुन (अलीम)

९ वही है जिसने तुम्हारे लिए पृथ्वीकी सर्व वस्तुएं उत्पन्न कीं फिर आकाश को चढ़ गया तो ठीक बनाए उनको सात आकाश और वह प्रत्येक वस्तु का ज्ञाता है

चौथा रुकू आयत १०+२९=३९

१ व इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिल् मलाइ३कति इन्नी जाइ३लुन फ़िल् अर्ज़ि ख़ली-फ़तन(ख़लीफ़ः),क़ालू अतज्अलु फ़ीहा मैं यु-फ़सिदु फ़ीहा व यस्फ़िकुद्दिमाइ३अ व नह्नु नुसब्बिहु बिहम्दि-क व नुक़द्दिसु ल-क (लक),क़ा-ल इन्नी आअ-लमु मा ला तअ-लमू-न (न)

१ (ऐ पैग़म्बर ! लोगों से उस समय का वृत्तान्त कहो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों (स्वर्ग दूतों) से कहा कि मैं पृथ्वी में (अपना) प्रतिनिधि बनाने वाला हूं, बोले क्या पृथ्वी में ऐसे लोगों को बनाता है जो इस में झगड़ा फैलावें, और लहू बहावें और हम स्तुति करते हुए तेरी पवित्रता और निर्दोषता का प्रकाश करते रहते हैं अल्ला ने कहा मैं वह जानता हूं जो तुम नहीं जानते,

२ व अल्ल-म आ-दमल् अस्माइ३अ कुल्लहा सुम्-म अ-र-ज़हुम् अलल् मला इ३कति फ़ क़ा-ल अम्बिऊनी बिअस्माइ३इ हा-उलाइ३इ इन कुन्तुम् स्वादिक़ी-न (न)

२ और आदम को सब नाम बता दिए फिर उन वस्तुओं को फ़रिश्तों के समक्ष रख के कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझ को इन वस्तुओं के नाम बताओ,

३ क़ालू सुब्हान-क ला इल्-म लना इल्ला मा अल्लम्तना, इन्न-क अन्तल् अलीमुल् हकीमु (म)

३ बोले तू पवित्र है जो तूने हम को बता दिया है उसके उपरान्त हमको कुछ ज्ञान नहीं, निश्चय तू ही जानने वाला और भेदका पहचानने वाला है

४ क़ा-ल या ! आ-दमु अम्बिहुम् बि-अस्माइ३इहिम्, फ़ लम्-मा अम्बाहुम् बिअस्माइ३इहिम् क़ा-ल अलम् अ क़ुल्लकुम् इन्नी आअ-लमु ग़ैबस्समा-वाति वल् अर्ज़ि व आ-लमु मा तुब्दू-न व मा कुन्तुम् तक्तुमू-न (न)

४ कहा ऐ आदम ! तुम इनको (फ़रिश्तों को) इनके नाम बताओ फिर जब उसने इनको उनके नाम बता दिए तो (अल्लाने) कहा क्यों मैं ने तुम से नहीं कहा था कि आकाशों की और पृथ्वी की सब अप्रकट वस्तुऐं मुझको ज्ञात है और तुम जो कुछ प्रकट रूप से करते हो और जो कुछ तुम मुझसे छिपाते हो मुझको सब का ज्ञान है

५ व इज़् क़ुल्ना लिलमलाइ३कतिस्जुदू लिआ-द-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, अबा वस्तक्ब-र व का-न मिनल् काफ़िरी-न (न)

५ और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के सामने नवो (नमस्कार करो) तो शैतान के सिवाय (सबके सब) झुक पड़े उसने अवज्ञा की और अभिमान में आ गया और अनाज्ञाकारियों में हो गया

६ व क़ुल्ना या ! आ-दमुस्कुन अन-त व ज़ौजुकल् जन्न-त व कुला मिन्हा र-ग़दन् हैसु शेतुमा व ला तक़्रबा हाज़िहिश्श-ज-र-त फ़ तकूना मिनज़् ज़ालिमी-न (न)

६ और हमने कहा ए आदम ! तुम और तुम्हारी स्त्री स्वर्गमें बसो और खाओ उसमें इच्छानुसार जहां कहीं से तुम्हारा जी चाहे परन्तु इस वृक्ष के पास न फटकना (ऐसा करोगे) तो तुम (हानि) अन्याय करोगे।

७ फ़ अज़ल्लहुमश्शैत्वानु अन्हा फ़ अख़्-र-जहुमा मिम्मा काना फ़ीहि (फ़ीः), व क़ुल्नाःबित्वू बअ-ज़ुकुम् लिबअ-ज़िन अदुव्वुन (अदुव्व),व लकुम् फ़िल् अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव्व मताउन इला हीनिन (हीन)

७ सो शैतान ने उनको वहांसे विचलित कर दिया और जिसमें थे उससे निकलवा छोड़ा और हमने कहा कि तुम (सब) उतर आओ तुम एक दूसरे के शत्रु हो और पृथ्वी में तुम्हारे लिए एक नियत समय तक ठिकाना और (जीवन व्यतीत करने की) सामग्री और साधन है

८ फ़-त-लक़्क़ा आ-दमु मिर्रब्बिही कलिमातिन फ़ ता-ब अलैहि (अलैः),इन्नहू हुवत्तव्वा-बुर्रहीमु (रहीम)

८ फिर आदम ने अपने रब से कुछ (क्षमा) के* वाक्य सीख लिए और अल्ला ने उनकी क्षमा स्वीकार की वस्तुतः वह बड़ा ही क्षमा करने वाला और कृपालु है

९ क़ुल्नाःबित्वू मिन्हा जमीअन (जमीआ), फ़ इम्मा यातियन्नकुम् मिन्नी हुदन फ़ मन तबि-अ हुदा-य फ़ ला ख़ौफ़ुन अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नू-न (न)

९ जब हमने कहा कि तुम सब यहां से उतर जाओ तो (साथ ही यह भी कहा कि) यदि मेरी ओर से तुम लोगों के पास कोई हिदायत (पथ प्रदर्शन) पहुंचे (तो उस पर चलना) क्योंकि जो कोई मेरे बताए पर चलेंगे उनको न भय होगा और न उनको शोक

१० वल्लज़ी-न क-फ़-रू व कज़्ज़बू बि आयातिना उलाइ३-क अस्हाबुन्नारि (नार), हुम् फ़ीहा ख़ालिदू-न (न)

१० जो लोग अवज्ञा करेंगे और हमारे चिन्हों को मिथ्या बतलावेंगे वही नार्किक होंगे और सदा नर्क ही में रहेंगे

पांचवां रुकू आयत ७+३९=४६

१ या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ-मतिय ल्लती अन्अम्तु अलैकुम् व औफ़ू बिअ़हदी ऊफ़ि बिअ़हदिकुम् व ईय्या-य फ़र्हबूनि (न)

१ ए इस्राईल की सन्तान† वह मेरी कृपा स्मरण करो जो मैं तुम पर कर चुका हूं और तुम उस प्रतिज्ञा को पूरी करो जो मुझ से की और मैं उस प्रतिज्ञा को पूरा करूं जो तुम से की और मेरा ही भय रखो

---

* क्षमा मांगने के जो वाक्य ईश्वर की ओर से आदम को सिखाये गए थे वह सातवीं सूरत के दूसरे रुकू की १३ वीं आयत में वर्णित हैं ऐसा मुसलमानों का मत है।

† बनी इस्राईल के शाब्दिक अर्थ हैं "इस्राईलके बेटे" इस्राईल नाम है हज़रत याकूब का यूनानी भाषा में "इस्रा" सेवक भक्त या दास को कहते है और "ईल" ईश्वरको तो आर्य्य भाषा में इसका अर्थ ईश्वर भक्त या ईश्वर दास हुआ बनी इस्राईल याकूब का वंशधर अर्थात् यहूद।

२ व आमिनू बिमा अन्ज़ल्तु मुसद्दिक़न् लिमा म-अ-कुम् व ला तकूनू अव्व-ल काफ़िरिम्बिही, व ला तश्तरू बिआयाती स-म-नन क़लीलन व ईय्या-य फ़त्तक़ूनि (न)

२ और उस पर विश्वास लाओ जो मैंने उतारा है (और वह) उस (तौरात) को सत्य बताता है जो तुम्हारे पास है और पहले इसके अविश्वासी न बनो और मेरी आयतों (मैं प्रेषित करके उन) के बदले में थोड़ी क़ीमत मत लो और हम ही से भय करो

३ व ला तल्बिसुल् हक़्-क़ बिल् बातिलि व तक्तुमुल्हक़्-क़ व अन्तुम् तअ्-ल-मू-न (न)

३ और सत्य को असत्य के साथ न मिलाओ और जान बूझ कर सत्य बात को न छिपाओ

४ व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वर्कअू मअ़र्रा-कि-ई-न (न)

४ और नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात (दान) दिया करो और जो लोग (नमाज़ के समय) झुकते हैं उनके साथ तुम भी झुका करो

५ अता मुरूनन्ना-स बिल्बिर्रि व तन्सौ-न अन्फ़ु-स-कुम् व अन्तुम् तत्लूनल् किता-ब अ-फ़-ला तअ्-क़िलू-न (न)

५ क्या तुम लोगों को शुभ कर्म करने की प्रेरणा करते हो और अपने को भूल जाते हो यद्यपि पुस्तक पढ़ते रहते हो, क्या तुम नहीं समझते

६ वस्तईनू बिस्सब्रि वस्सलाति (वस्सला:), व इन्नहा ल-कबीर-तुन इल्ला अलल् ख़ाशिई-न

६ धैर्य प्राप्त करो संतोष और उपासना से और वास्तव में यह (नमाज़) भारी है परन्तु उन पर नहीं जो नम्र हैं

७ अल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम् मुलाक़ू रब्बिहिम् व अन्नहुम् इलैहि राजिऊ-न

७ जो यह विचार करते हैं कि वह (अंत में) अपने रब से मिलने वाले हैं और उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं

छटा रुकू आयत १३+४६=५९

१ या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ्-मतियल्लती अनअम्तु अलैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अलल् आलिमी-न (न)

१ ऐ इस्राईल की संतान मेरी वह कृपा स्मरण करो जो मैंने तुम पर की और यह कि मैंने तुमको जगत के लोगों से उच्चता प्रदान की

२ वत्तक़ू यौमल् ला तज्-ज़ी नफ़्सुन अन नफ़्सिन शैअव्व ला युक़्बलु मिन्हा शफ़ा-अतुंव्व ला यौख़ज़ु मिन्हा अद्लुंव्व लाहुम् युन्-स-रू-न

२ और उस दिन से डरो कि कोई पुरुष किसी पुरुष के कुछ भी काम न आवे और न उसकी ओर से सिफ़ारिश स्वीकार हो और न उससे बदले में कुछ लिया जावे और न लोगों को कुछ सहाय पहुंचे

३ व इज़ नज्जैनाकुम् मिन आ-लि फ़िरऔ-न यसूमू-न-कुम् सूअल् अज़ाबि युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अ-कुम् व फ़ी ज़ालिकुम् बला-उम् मिर्रब्बि कुम् अज़ीमुन (अज़ीम्)

३ और (उस समय को याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔन के लोगों से मुक्त किया जो तुम को बुरी (बुरी) पीड़ा पहुंचाते थे कि तुम्हारे पुत्रों को हनन करते और तुम्हारी स्त्रियों को (अपनी सेवा के लिये) जीवित रहने देते और इसमें तुम्हारे रब से बड़ी परीक्षा थी

४ व इज़ फ़रक़्ना बिकुमुल्बह्-र फ़ अन्जैनाकुम् व अग़रक़्ना आ-ल फ़िरऔ-न व अन्तुम् तन्ज़ुरू-न

४ और जब हमने तुम्हारे लिए समुद्र को फाड़ दिया फिर हमने तुमको मुक्त किया और फ़िरऔन* के लोगों को तुम्हारे देखते २ डुबो दिया†

५ व इज़ वा-अद्ना मूसा अर्बई-न लैलतन सुम्मत्तख़ज़्तुमुल् इज्-ल मिम्बअ्-दिही व अन्तुम् ज़ालिमू-न

५ और जब हमने मूसा से (तौरात की पुस्तक देने के लिए) चालीस रात्रियों की प्रतिज्ञा‡ की फिर तुम उनके पीछे बछड़े (की पूजा) को ले बैठे और तुम अन्याय कर रहे थे

६ सुम्-म अफ़ौना अनकुम् मिम्बअ्दि ज़ा-लि-क ल-अल्ल-कुम् तश्कुरू-न

६ फिर इसके पश्चात् भी हमने तुमसे उपेक्षा की कि तुम हमारे कृतज्ञ होवो

७ व इज़् आतैना मूसल्किता-ब वल् फ़ुर्क़ा-न ल-अल्ल-कुम् तह्-त-दू-न

७ और जब हमने मूसाको पुस्तक (तौरात) प्रदान की और 'धर्म व्यवस्था', इस कारण कि तुम मार्ग पावो

८ व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही इन्नकुम ज़लम्-तुम् अन्फ़ु-स-कुम् बित्तिख़ाज़िकुमुल् इज्-ल फ़तूबू इला बारि-इकुम फ़क़्तुलू अन्फ़ु-स-कुम्, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन्-द बारि-इकुम्, फ़ ता-ब अलैकुम्, इन्नहू हुव

८ और जब मूसाने अपनी जाति से कहा कि (जाति) भ्राताओ तुमने बछड़े की पूजाके ग्रहण करने से अपने ऊपर अन्याय किया तो (अब) अपने रचयिता के समक्ष पश्चात्ताप करो (और अपने लोगों के हाथों से) अपना हनन करो जिसने तुमको पैदा किया है उसके निकट तुम्हारे लिए यही उचित (दंड) है फिर (ईश्वर ने)

* फ़िरौन मिश्र देश के राजा की पदवी थी और वह स्वाधीन था हज़रत यूसुफ़ ने बनी इस्राईल को मिश्र में बुला कर बसाया और उनका वंश मिश्र में फैला इस समय के फ़िरऔन बनी इस्राईल से द्वेश रखते थे और मिश्र देश में परदेशियों का बसना उनको सुहाता न था और सर्वाधिकारी होने के कारण बनी इस्राईल को अनेक प्रकार के दुःख देते इन से नीच सेवा कराते और उनकी स्त्रियों (पुत्रियों) का धर्म बिगाड़ते जब इनके दुख का पारावार न रहा तो ईश्वर ने इनकी रक्षा के वास्ते हज़रत मूसा को इनमें उत्पन्न किया।

† हज़रत मूसा बनी इस्राईल को चुपचुपाते पिछली रात मिसर से लेकर निकले फ़िरऔन को पता लगा तो उसने उनका पीछा किया प्रातः काल होते ही ऐसे स्थान पर जा लिया कि अभी दरिया से पार न होने पाये थे बनी इ० के लिये यह एक बड़ी आपत्ति का समय था पीछे दुश्मन आगे दरिया नौका इत्यादि पास नहीं। मूसा ने अपनी लाठी दरिया पर मारी तो वह फट कर टुकड़े २ हो गया बनी इस्राईल सूखे निकल गए। फ़िरऔन पीछा दबाए चला आता था जब दरिया के बीच में आया तो दरिया के टुकड़े मिलकर एक हो गये फ़िरऔन और उसका समस्त लश्कर डूब गया (बोलो सनातन धर्म की जय)

‡ मूसा को अल्लाह ने तौरात देने के लिए तूर पर्वत पर बुलवा भेजा था कि एक महीने पहाड़ पर आकर रहो फिर अल्लाह ने एक महीने का चिल्ला (४० रात्रि) कर दिया।

वौ-वा-बुर्रहीमुन (रहीम्)

९ व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन्नोमि-न ल-क हत्ता न-रल्ला-ह जह्-र-तन फ़ अ-ख़-ज़त् कुमुस्स्वा-इ-क़तु वअन्तुम् तन्ज़ुरू-न

१० सुम्-म ब-अस्नाकुम् मिम् ब-अ-दि मौतिकुम् ल-अल्-लकुम् तश्कुरू-न

११ व ज़ल्लल्ना अलैकुमुल् ग़-मा-म व अन्ज़ल्ना अलैकुमुल् मन-न वस्सल्वा, कुलू मिन् त्वैयिबा-ति मा र-ज़क़् कुम्, व मा ज़-ल-मूना व लाकिन् कानू अन्फ़ु-स-हुम् यज़्लिमू-न

१२ व इज़् क़ुल्नद् ख़ुलू हा-ज़िहिल् क़ र्य-त फ़कुलू मिन्हा हैसु शेतुम् र-ग़-दन् वद् ख़ुलुल् बा-ब सुज्जदन् व क़ूलू हित्त्वतुन् नग़्फ़िर्लकुम् ख़त्वा-या कुम् व स-न-ज़ीदुल् मुह्सिनी-न

तुम्हारी क्षमा स्वीकार की निःसन्देह वोह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है

९ और जब तुम (तुम्हारे बड़ों) ने कहा था कि ऐ मूसा ! जब तक हम अल्ला को प्रत्यक्ष न देख लें हम किसी प्रकार भी तुम्हारा विश्वास करने वाले हैं नहीं (कि अल्ला तुमसे बात कर रहा है) इस पर तुमको बिजली ने आदबाया और तुम देखा किए

१० फिर तुम्हारी मृत्यु के पश्चात् हमने तुमको जीवित कर उठा खड़ा किया कि स्यात् तुम मेरे आभारी होवो ।

११ और हमने तुम पर बादल की छाया की और तुम पर मन्न और सल्वा भी उतारा (और आज्ञा दी कि) हमने जो तुमको पवित्र भोजन दिया है खाओ और (इन लोगों ने) हमारा तो कुछ नहीं बिगाड़ा परंतु अपना ही खोते रहे

१२ और जब हमने तुमको आज्ञा दी कि इस ग्राम में जाओ और उसमें आनंद से जहां चाहो खाओ और द्वार से दण्डवत करते हुए प्रवेश करना और 'हित्वतुन' अर्थात्:- (पाप दूरहों) कहते आना तो हम तुम्हारी भूल क्षमा कर देंगे और शुभ कर्म करने वालों को विशेष भी देंगे

* मूसा ब० ई० को लेकर मिश्र से निकले तो ईश्वर ने ब० ई० से प्रतिज्ञा की कि अमालका जाति से लड़ोगे तो हम तुमको विजय प्राप्त करावेंगे और शाम देश में तुम्हारा राज्य स्थापन कर देंगे—मूसाने बहुत कुछ समझाया पर उनका साहस न हुआ इस अवज्ञा के कारण ईश्वर ने उनको दंड दिया और ४० वर्ष तक बन में भटकते फिरे बड़ी विपत्तियां सहीं इस पर मूसा की प्रार्थना के प्रताप से ईश्वर ने ब० इ० पर अनेकानेक कृपाएं कीं सूर्य के ताप से रक्षा के लिए अभ्र अपनी छाया करता, भोजन के लिए अन्न और सल्वा मिलता—रात्रि को जो ओस पड़ती तो एक वस्तु मीठी २ जंगली वृक्षों पर जम जाती वही मन्न थी उसको खुरच लाते और मिठाई के स्थान पर खाते और सल्वा बटेर के समान एक जानवर था, रातको जहां ब० इ० का पड़ाव पड़ता वह जानवर आप से आप चारों ओर एकत्रित हो जाते वह इनको भूंज कर कबाब (भुजिया) बनाते परन्तु आज्ञा यह थी कि कल के लिए कोष न एकत्र करो, इन लोगों से संतोष न हो सका और लगे जोड़ २ कर रखने, अन्त में मन्न और सल्वा का उतरना बंद हो गया ।

१३ फ़ बद्दलल्लज़ी-न ज़-ल-मू क़ौ-लन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़ अ न्ज़ल्ना अ-लल्लज़ी-न ज़-ल-मू रिज्ज़म् मि-नस्समा-इ बिमा कानू य फ़्सुक़ू-न

१३ फिर अन्यायियों ने उस बातको जो उनको बताई गई थी बदल डाली और दूसरी बोलने लगे तो हमने उन अन्यायियों पर उनकी अवज्ञा के ही अपराध में आकाश से आपत्ति डाली*

सातवां रुकू । आयत २+५९—६१

१ व इज़िस्तस्क़ा मूसा लि क़ौमिही फ़ क़ुल्नज़्रिब् बि-असाकल् ह-ज-र (हजर) फ़न् फ़-जरत् मिन्हुस्-नता अश्-रत अैना, क़द् अलि-म कुल्लु उनासिम् मश्-रबहुम्, कुलू वश्रबू मिर्रिज़्क़िल्ला-हि वला तअ्सौ फ़िल्-अर्ज़ि मुफ़्सिदी-न

२ व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन् नस्बि-र अला तआ-मिंव्-वाहिदिन् फ़द्-उ लना रब्ब-क युख़्रिज् लना मिम्मा तुम्बितुल् अर्ज़ु मिम् बक़्लिहा व क़िस्सा-इहा व फ़ूमिहा व अ-दसिहा व ब-स-लिहा, क़ा-ल अतस्तब्दिलूनल्लज़ी हु-व अद्ना बिल्लज़ी हु-व ख़ैरुन् (ख़ैर), इह्बितू मिस्रन् फ़-इन्न ल कुम् मा स-अल्तुम्, व ज़ुरिबत् अ लैहिमुज़्ज़िल्लतु वल् मस्-कनतु व बा ऊ बि-ग़-ज़-बिम् मिनल्ला-हि, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू-न बि आया-तिल्ला-हि व यक़्तुलूनन्नबीयी-न बिग़ैरिल्-हक़्क़ि (हक़), ज़ा-लि-क बिमा अ़सौ व कानू यअ्-तदू-न

१ और जब मूसाने अपनी जाति के लिए पानी मांगा तो हमने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मार तो उससे बारह स्रोत बह निकले, सब लोगों ने अपना (अपना) घाट जान लिया (फिर आदेश हुआ कि) अल्ला के (दिए हुए) पदार्थ खाओ और पीओ और देश में झगड़ा न फैलाते फिरो

२ और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा ! हम से तो एक भोजन पर नहीं रहा जाता सो हमारे लिए अपने रब को पुकार कि निकाले (उत्पन्न करे) हमारे लिए जो पृथ्वी से उगती है अर्थात्- शाक पात, और ककड़ी और गेहूं और मसूर और प्याज (मूसाने) कहा कि जो वस्तु बढ़िया है क्या तुम उसके बदले में ऐसी वस्तु लेना चाहते हो जो घटिया है, (अच्छा तो) किसी नगर में उतर पड़ो कि जो मांगते हो तुमको मिलेगा और उन पर दुर्दशा और दारिद्रय की मार डाली गई और अल्ला का कोप कमालाए यह इस कारण कि वह अल्ला की आयतों को नहीं मानते और पैग़म्बरों को अन्याय पूर्वक हनन किया करते थे (और) यह इस लिए (भी) कि उन्होंने अवज्ञा की और सीमा से बढ़ (बढ़) जाते थे ।

* महा मारी फैली और थोड़ा हुआ राज्य फिर हाथ से जाता रहा ।

आठवां रुकू । आयत १०+६१=७१

१ इन्नल्लज़ी-न आ-मनू वल्लज़ी-न हादू व न्नसारा वस्सा-बिई-न मन आ-म-न बिल्ला-हि वल् यौमिल् आ-खिरि व अमि-ल स्वालिहन फ़ लहुम् अज्रुहु म् इन्-द रब्बिहिम्, व ला खौफ़ुन अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नू-न

१ निस्सन्देह मुसल्मान और यहूदी और ईसाई और साबीक* इन में से जो लोग अल्ला पर और अंतिम दिवस पर विश्वास लाए और शुभ कर्म किए तो उनको उनका बदला उनके रबके यहां मिलेगा और उनपर न भय होगा और न वह शोक ग्रस्त होंगे ।

२ व इज़् अखज़्ना मीसा-क़-कुम् व र-फ़अ्-ना फ़ौ-क़-कुमुत्तू-र, ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिन वज़्कुरू मा फ़ीहि ल-अल्ल-कुम् तत्तक़ू-न

२ और जब हमने तुमसे (तौरात पर चलने की) प्रतिज्ञा ली और तुम्हारे ऊपर 'तूर' (पर्वत) को उठाकर ला लटकाया,† (और कहा) जो हमने तुमको दी है वह दृढ़ता से पकड़े रहो और जो उस में है याद रखो कारण कि तुम विवेकी बन जाओ ;

३ सुम्-म तवल्लैतुम् मिम् बअ्दि ज़ा-लि-क, फ़ लौ ला फ़ज़्लुल्ला-हि अलैकुम् व रह्-म-तु-हू लकुन्तुम् मिनल् ख़ासिरी-न

३ फिर इसके पश्चात तुम फिर गए तो यदि तुम पर अल्ला की करुणा और दया न होती तो तुम घाटे में आगए होते ।

४ व लक़द् अलिम्तुमुल्लज़ीनअ्-तदौ मिन्कुम् फ़िस्सब्ति फ़ क़ुल्ना लहुम् कूनू क़ि-र-द-तन खासिई-न

४ और उन लोगों को तो तुम जान ही चुके हो जिन्होंने तुम में से शनिवार‡ के दिन (का मान्य न करने में) सीमा का उल्लङ्घन किया तो हमने उनसे कहा कि बंदर बनजाओ निंदित

* स्वाबिईन दार्शनिक विचार के पुरुष थे कुछ अद्वैत-ईश्वरोपासक थे और कुछ अन्य प्रकार के भी ।

† यहूदियों को तौरात दी गई तो उसकी मोटाई देख कर घबराए और कहने लगे कि हम से तो इतनी बातों पर चला नहीं जा सकेगा, ईश्वर ने तूर पर्वत को उनके ऊपर अधर लटका दिया कि मानते हो तो मानो नहीं अभी कुचला किए देता हूं, अन्त को मान गए (न जाने अब खुदा ऐसी तर्कीबें क्यों भूल गया)

‡ जिस प्रकार मुल्मानों में शुक्र वार और ईसाइयों में आदित्य वार पवित्र और ईश्वरोपासना के वास्ते मुख्य दिन है यहूद के वास्ते शनिवार नियत था, और अनेक आज्ञाओं में से एक आज्ञा यह भी थी कि शनिवार को शिकार न करना यह लोग क्या चाल करते कि समुद्र के तट पर गढ़े खोद रखते थे, शुक्र के दिन समुद्र का पानी उन गढ़ों में भर लेते और पानी के साथ मछलियां भी आ जाती, अगले दिन गढ़ों में से मछलियां निकाल लेते और कहते कि यह शुक्र का किया हुआ शिकार है, उनको ईश्वर ने दंड दिया कि उनकी आकृतियों को बदल कर बंदर बना दिए और उन पर दुर २ की बौछार पड़ने लगी ।

आर्य समाज

५ फ़ जअ़ल्नाहा नकालल्लिमा बै-न यदैहा व मा खल्फ़-हा व मौइज़्-तल् लिल् मुत्तक़ी-न

५ सो हमने इस घटना को उसके लिए जो इस समय उपस्थित थे और जो पीछे आने वाले थे शिक्षा प्रद बनाया और डरने वालों (अथवा विवेकियों) के लिए उपदेश

६ व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही इन्नल्ला-ह या-मुरुकुम् अन्तज़्बहू ब-क़-रतन (ब-क़रः), क़ालू अतत्तख़िज़ुना हुज़ुवन (हुज़्वा), क़ा-ल अ-ऊज़ु बिल्ला-हि अन अकू-न मिनल् जाहिली-न

६ जब मूसाने अपनी जाति से कहा अल्ला तुमको आज्ञा करता है कि एक गौ को मारो, वह लगे कहने कि क्या तुम हमसे उपहास करते हो कहा अल्ला मुझे अपनी शरण में रखे कि मैं होऊं मूर्खों में (अर्थात मूर्खों जैसा काम करूं)

७ क़ालुद् उ-ल-ना रब्ब-क युबैयिल्लना माहि-य (माही), क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुल्ला फ़ा-रिज़ुन व ला बिक्रुन (बिक्र), अवानुम्बै-न ज़ा-लि-क, फ़फ़्अलू मा तोमरू-न

७ वह बोले अपने रबको हमारे लिए पुकारो कि हमको अच्छे प्रकार बतावे कि वह कैसी हो (मूसाने) कहा वह कहता है कि वह गौ न बूढ़ी हो और न बछिया दोनों में मध्य की राशि की सो करो जो तुम को आज्ञा दी गई है ।

८ क़ालुद् उ-ल-ना रब्बक युबैयिल्लना मा लौनुहा, क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुन स्फ़्रा-उ फ़ाक़िउल्लौनुहा तसुर्रुन्नाज़िरी-न

८ वह बोले अपने रब से हमारे लिए प्रार्थना करो कि अच्छी प्रकार समझा दे कि उसका रंग कैसा हो (मूसाने कहा वह (अल्ला) कहता है कि वह गाय पीत वर्ण की हो (और) उसका वर्ण गहरा हो कि देखने वालों को अच्छी लगे ।

९ क़ालुद् उ-ल-ना रब्ब-क युबैयिल्लना मा हि-य, इन्नल् ब-क़-र-तशाब-ह अलैना, व इन्ना इन्शा अल्ला-हु लमुह्तदू-न

९ वह बोले कि अपने रब से हमारे लिए प्रार्थना करो कि हमको अच्छी प्रकार समझावे कि वह क्या हो (किस प्रकार की हो) हमको तो गौओं में संशय हुआ है (या हमको तो गौएं एक ही प्रकार की दृष्टिगोचर होती हैं) और अल्लाने चाहा तो हम अवश्य (उसका) ठीक पता लगा लेंगे ।

१० क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-र-तुल्ला ज़लूलुन तुसीरुल् अर्ज़ व ला तस्क़िल् हर्-स (हर्स), मुसल्ल-म-तुल्ला शि-य-त फ़ीहा, क़ा-लुल्आ-न जे-त बिल्हक़्क़ि (हक़्क़), फ़-ज़-बहूहा व मा कादू यफ़्अलू-न

१० (मूसाने) कहा अल्ला कहता है वह गौ हो, न तो भार हार कि पृथ्वी जोतती हो (हलचलाती हो) और न खेती को पानी देती हो पूर्णाङ्गी हो उसमें कलङ्क कुछ न हो, वह बोले अब तू ठीक (पता) लाया सो उन्होंने गायको हत की और प्रतीत न होते थे कि करेंगे ।

नवां रुकू । आयत ११+७१=८२

१ व इज़्क़तल्तुम् नफ़्सन फ़द्दारातुम् फ़ीहा, वल्लाहु मुख़्रिजुम् मा कुन्तुम तक्तुमू-न

२ फ़ क़ुल्नज़्रिबूहु बि-बअ्ज़िहा, कज़ा-लि-क युह़्यिल्ला-हुल्मौता व युरीकुम् आ-या-ति-ही ल-अ़ल्ल-कुम् तअ्-क़िलू-न

३ सुम्-म क़-सत् क़ुलूबुकुम् मिम् बअ्दि ज़ा-लि-क फ़ हि-य कल् हिजा-र-ति औ अशद्दु क़स्वतन् (क़स्वः), व इन्-न मिनल् हिजा-रति लमा य-त-फ़ज्जरु मिन्हुल् अन्हारु (अन्हार), व इन्-न मिन्हा लमा यश्शक़्क़ु फ़ यख़्रुजु मिन्हुल् मा-उ (मा), व इन्-न मिन्हा लमा यह्बितु मिन् ख़श्-य-तिल्लाहि, व मल्लाहु बि-ग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्-म-लू-न

४ अ-फ़-तत्व-मऊ-न अँय्युअ्मिनू लकुम् व क़द् का-न फ़रीक़ुम् मिन्हुम् यस्मऊ-न कलामल्लाहि सुम्-म युहर्रिफ़ूनहू मिम् बअ्दि मा अ़-क़-लूहु व हुम् यअ्-लमू-न

५ व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आ-म-नू क़ा-लू आ-मन्ना, व इज़ा ख़ला बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन् क़ालू अतुहद्दिसू-नहुम् बिमा फ़-त-हल्लाहु अ़लैकुम् लियुहाज्जूकुम् बिही इन्-द रब्बिकुम् , अ-फ़-ला तअ्-क़िलू-न

६ अ-व ला यअ्-लमू-न अन्नल्ला-ह यअ्-

१ और (ऐ इस्राईल की संतान) जब तुमने एक पुरुष को मार डाला और उस (के संबन्ध) में एक दूसरे को दोषी ठहराने लगे और जो तुम छिपाते थे अल्ला उसको प्रकट करने वाला था

२ सो हमने कहा कि उस मृतक के गाय का एक टुकड़ा मारो इसी तरह अल्ला मुर्दे जीवित करेगा और तुमको अपनी निशानियां दिखाता है कि तुम समझो

३ फिर इसके पश्चात् तुम्हारे हृदय कठोर होगए कि मानो वह पाषाण हैं वरन् उनसे भी कठोर और पाषाणों में तो कोई ऐसे भी हैं जिन में से पानी के स्रोत बह निकलते हैं और कोई पाषाण ऐसे भी होते हैं जो फट जाते हैं और उनसे जल झरता है और कोई पाषाण ऐसे भी होते हैं जो अल्ला के भय से गिर पड़ते हैं और जो कुछ तुम करते हो अल्ला उससे अजानने नहीं है

४ (मुसलमानो, क्या तुमको आशा है कि (यहूद) तुम्हारी बात स्वीकार करलेंगे और कुछ लोग इनमें (ऐसे भी) थे कि अल्ला की वाणी सुनते थे फिर उसके समझे पीछे जानबूझ कर उसको प्रक्षिप्त कर देते थे ।

५ और जब विश्वास वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम भी विश्वास कर चुके है और जब एकान्त में एक दूसरे के पास होते हैं तो कहते हैं कि तुम क्यों कह देते हो उनसे जो अल्लाने तुम पर प्रकट किया है (कहीं ऐसा न हो कि) तुम्हारे रब के सामने उसी बात से (प्रमाण रूपेण) तुमसे झगड़ें, तो क्या तुम (यह भी) नहीं समझते ।

६ क्या इतना भी नहीं जानते कि जो कुछ छिपाते

लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्-लिनू-न

७ व मिन्हुम् उम्मीयू-न ला यअ्-ल-मूनल् किता-ब इल्-ला अमानी-य व इन्हुम् इल्ला यज़ुन्नू-न

८ फ़ वैलुल्लिल्लज़ी-न यक्तुबूनल् किता-ब बिऐदीहिम्, सुम्-म यक़ूलू-न हाज़ा मिन् इन्दिल्ला-हि लियश्तरू बिही स-म-नन क़लीलन (क़लीला), फ़वैलुल्लहुम् मिम्मा क-त-बत् ऐदीहिम् व वैलुल्लहुम् मिम्मा यक्सिबू-न

९ व क़ालू लन तमस्सनन्ना-रु इल्ला अय्यामम् मअ्दूदतन (मअ्दूदः), क़ुल् अत्तख़ज़्तुम् इन्दल्ला-हि अ़ह्दन फ़ लैंयुख़्लिफ़ल्ला-हु अ़ह्दहू अम् तक़ूलू-न अ़लल्ला-हि मा ला तअ्-ल-मू-न

१० बला मन क-स-ब सैयिअतौं व अहा-तत् बिही ख़त्वीअतुहू फ़ उलाइ-क अस्हाबुन्ना-रि (नार), हुम् फ़ीहा ख़ालिदू-न

११ वल्लज़ी-न आ-म-नू व अ़मिलुस्स्वा-लिहा-ति उला-इ-क अस्हाबुल् जन्नति (जन्नः), हुम् फ़ीहा ख़ालिदू-न

है और जो कुछ प्रकट करते हैं अल्ला (सब) जानता

७ और कुछ इन में अपठित हैं जो बुड़बुड़ा लेने के सिवाय किताब के (अर्थ को) नहीं समझते और वह केवल विचार के तुक्के चलाया करते हैं

८ उन लोगों पर शोक है जो अपने हाथों से तो पुस्तक लिखें फिर कहें कि यह अल्ला की ओर से है इसलिए कि उससे कुछ धन कमावें, सो शोक है उन पर कि उन्होंने अपने हाथों लिखा और (पुनः) शोक है उन पर कि वह ऐसी कमाई करते हैं

९ और कहते हैं कि गिनती के कुछ दिनों को छोड़ कर (नर्क की) अग्नि हमको स्पर्श (भी) नहीं करेगी (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो क्या तुमने अल्ला से कोई प्रतिज्ञा लेली है और अल्ला अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध नहीं करेगा या अल्ला के विषय में (वह) कहते हो जो तुम नहीं जानते ?

१० यथार्थ तो यह है कि जिसने पाप कमाया और अपने पाप के फेर में आगया सो ऐसे ही लोग नार्किक हैं कि सदा नर्क ही में रहेंगे

११ जोलोग विश्वास लावें और शुभ कर्म किये ऐसे ही लोग स्वर्गीय हैं कि वह सदा स्वर्ग ही में रहेंगे

दसवां रुकू । आयत ४+८२=८६

१ व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़ बनी इस्राई-ल ला तअ्बुदू-न इल्लल्ला-ह व बिल् वा-लि-दैनि इह्सानौं व ज़िल्क़ुर्बा वल् यतामा वल् मसा-कीनि व क़ूलू

१ और जब हमने इस्राईली संतान से पक्की प्रतिज्ञा ली कि अल्ला के सिवाय किसी की उपासना न करना और माता पिता से अच्छा बर्ताव करते रहना और सम्बन्धियों और अनाथों और कंगालों और (सर्व) मनुष्यों से अच्छी तरह

लिन्ना-सि हुस्नौं व अक़ीमुस्स्वला-त
व आतुज़्ज़का-त, सुम्-म तवल्लैतुम्
इल्ला क़लीलम् मिन्कुम् व अन्तुम्
मुअ्रिज़ू-न

२ व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़-कुम् ला
तस्फ़िकू-न दिमा-अ-कुम् व ला
तुख़्रिजू-न अन्फ़ु-स-कुम् मिन् दियारि
कुम् सुम्-म अक़्रर्तुम् व अन्तुम् तश्ह-
दू-न

३ सुम्-म अन्तुम् हा-उला-इ तक़्तुलू-न
अन्फ़ु-सकुम् व तुख़्रिजू-न फ़रीक़म्
मिन्कुम् मिन दिया-रिहिम्, तज़ा-
ह-रू-न अ़लैहिम् बिल् इस्मि उ़द्वा-नि
(न),व ईयातूकुम् उस्रा तुफ़ादूहुम् व
हु-व मुहर्रमुन् अ़लैकुम् इख़्रा-जुहुम्, अ-
फ़-तोमिनू-न बिबअ्ज़िल् किता-बि
व तक्फ़ुरू-न बिबअ्ज़िन (बअ्ज़्र),
फ़ मा जज़ा-उ मैं यफ़्अ़लु ज़ा-
लि-क मिन्कुम् इल्ला ख़िज़्युन फ़िल्
हयातिद्दुन्या, व यौमल् क़िया-मति
युरद्दू-न इला अशद्दिल् अ़ज़ा-बि
(अज़ाब), व मल्ला-हु बिग़ा-फ़िलिन्
अ़म्मा तअ़-म-लू-न

४ उला-इकल्लज़ीनश्त-र बुल्हया-त
द्दुन्या बिल् आ-ख़ि-रति(आख़िरः),
फ़ ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल् अ़ज़ा-बु
व ला हुम् युन्स्वरू-न

बात करना और नमाज
(दान) देते रहना, फिर तुम में से कुछ को
छोड़ कर (शेष सब) फिर गए और तुम
ध्यान नहीं देते

२ और जब हमने तुम से (अर्थात् तुम्हारे
भरो से) दृढ़ प्रतिज्ञा ली कि परस्पर लहू मत
बहाना और न अपने देशों से अपने लोगों को
देश निकाला देना फिर तुमने (अर्थात् तुम्हारे
बड़ों ने) प्रतिज्ञा की और तुम साक्षी हो

३ फिर वही तुम हो कि अपनों को मारते हो और
अपने में से कुछ लोगों को अपने देशों से
निकाल देते हो, और उन पर पाप और
अन्याय से चढ़ाई करते हो और वही लोग क़ैद
होकर यदि तुम्हारे पास आवें तो (चट्टी भर
कर उन कों) छुड़ा लेते हो, जो (पहिले से
उनका निकाल देना ही तुम्हारे लिए अधिकृत
न था, तो क्या अल्ला की पुस्तक (का कुछ
भाग) मानते हो और कुछ नहीं मानते, तो
जो तुम में से ऐसा करें उनका इसके अति-
रिक्त और क्या बदला हो सकता है कि
सांसारिक जीवन में वह कलंकित हों और
और क़यामत(प्रलय) के दिन (नर्क के) बड़े
ही कठोर दुःख की ओर लौटाए जावेंगे और जो
कुछ तुम करते हो अल्ला उस से अनभिज्ञ नहीं है।

यही हैं जिन्होंने परलोक के बदले सांसारिक
जीवन मोल लिया, सो न तो उनसे दुःख ही हलका
किया जावेगा और न उनको सहायता ही पहुंचेगी।

ग्यारहवां रुकू। आयत १०+८६=९६

१ व ल-क़द् आतैना मूसल्किता-ब व
क़फ़्फ़ैना मिम् बअ्दिही बिर्रुसुलि
(रसुल्), व आतैना ईसब्-न मर्यमल्
बैयिना-ति व ऐयद्नाहु बिरूहिल्क़ु-
दुसि (क़ुदुस्), अफ़कुल्लमा जा-
अकुम् रसूलुम् बिमा ला तःवा अन्फ़ु
सुकुमुस्तक्बर्तुम् , फ़ फ़रीक़न् कज़्ज़
बतुम् व फ़रीक़न् तक़्तुलू-न

२ व क़ालू क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन् (ग़ुल्फ़),
बल् ल-अ़-न-हुमुल्ला-हु बिकुफ़्रिहिम्
फ़ क़लीलम् मा योमिनू-न

३ व लम्मा जा-अ-हुम् किताबुम् मिन
इ़न्दिल्ला-हि मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अ़-हुम्
व कानू मिन् क़ब्लु यस्तफ़्तिहू-न
अ़लल्लज़ी-न क-फ़-रू, फ़लम्मा
जाअहुम्मा अ़-र-फ़ू क-फ़-रू बिही
(बिः),फ़ लअ्-न-तुल्ला-हि अ़लल्
काफ़िरी-न

४ बेःस मश्तरू बिही अन्फ़ु-स-हुम्
ऐंयक्फ़ुरू बिमा अन्ज़लल्ला-हु बग़्यन
ऐंयुनज़्ज़िल-ल्ला-हु मिन् फ़ज़्लिही
अ़ला मैंयशा-उ मिन् इ़बादिही
(इ़बादिः), फ़ बा-ऊ बिग़-ज़-बिम्
अ़ला ग़-ज़-बिन (ग़ज़ब्), व
लिल् काफ़िरी-न अ़ज़ाबुम् मुहीनुन
(मुहीन्)

५ व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू बिमा

१ निश्चय हमने मूसा को पुस्तक (तौरात) दी
और उसके पश्चात् अनुक्रम से (और) रसूल
(दूत) भेजे और मरियम के पुत्र ईसा को
हमने स्पष्ट चमत्कार प्रदान किये और पवित्र
आत्मा से उसकी सहायता की, तो क्या जब
जब तुम्हारे पास कोई रसूल तुम्हारी अपनी
इच्छा से विरुद्ध कुछ लेकर आया, तुम अकड़
बैठे, फिर कुछ को तुमने झुठलाया और कुछ
को लगे मारने (क़त्ल करने)

२ और कहते हैं हमारे दिल ढके हुए हैं (नहीं)
किन्तु उनके अविश्वास के कारण अल्ला ने
उनको धिक्कारा है सो बिरले ही विश्वास
करते हैं

३ और जब अल्ला की ओर से पुस्तक (कुरान)
पहुंची (और वह) उस (किताब) को जो
उनके पास है प्रमाणित (भी) करती है,
और इससे पहले अविश्वासियों पर जीत की
प्रार्थना किया करते थे, तो जब वह वस्तु
जिससे परिचित थे आ उपस्थित हुई तो उस
में अविश्वास करने लगे, सो अविश्वासियों पर
अल्ला की धिक्कार

४ क्या ही बुरा मोल है जिसके बदले अपनी
जानों को मोल लिया है कि अल्ला की उतारी
हुई बाणी पर विश्वास नहीं लाये (केवल)
इस हठ से कि अल्ला अपने सेवकों में से जिस
पर चाहे अपनी कृपा से आकाश वाणी भेजता
है, सो कोप पर कोप में फंस गए और
अविश्वासियों के लिये अपमान की मार है

५ और जब इनसे कहा जाता है कि जो अल्ला

ज़ुहूरिहिम् क-अन्नहुम् ला यअ़्-ल-मू-न

६ वत्त-ब-ऊ मा तत्लुश्शयाती-नु अ़ला मुल्कि सुलैमा-न, व मा क-फ़-र सुलैमा-नु (न), व लाकिन्नश्शयाती-न क-फ़-रू युअ़ल्लिमूनन्नासस्सिह्-र (र्), व मा उन्ज़ि-ल अ़लल् म-ल-कैनि बिबा-बि-ल हारू-त व मारू-त (त्), व मा युअ़ल्लिमा-नि मिन् अ-ह्-दिन् ह़त्ता यक़ूला इन्नमा नह़्नु फ़ित्नतुन् फ़ ला तक्फ़ुर्, फ़ य-त-अ़ल्लमू-न मिन्हुमा मा युफ़र्रिक़ू-न बिही बैनल् मर्इ व ज़ौजिही (ज़ौजिः), व हुम् बिज़ार्री-न बिही मिन् अ-ह्-दिन् इल्ला बिइज़्निल्ला-हि (लाः), व य-त-अ़ल्लमून मा यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़उहुम्, व ल-क़द् अ़लिमू ल-म-निश्तरा-हु मा लहू फ़िल् आख़िरति मिन् ख़लाक़िन् (ख़लाक़्) व ल-बे-स मा शरौ बिही अन्फ़ु-स-हुम्, लौ कानू यअ़्-ल-मू-न

७ व लौ अन्नहुम् आ-म-नू वत्तक़ौ ल-म-सू-ब-तुम् मिन् इन्दिल्ला-हि ख़ैरुन् (ख़ैर्), लौ कानू यअ़्-ल-मू-न

पीठ के पीछे फेंका कि मानो इनको कुछ ज्ञान ही नहीं है

६ और उन (पाखंडों) के पीछे पड़ गए जिनको सुलेमान के राज्य में शैतान पढ़ा करते थे, और सुलेमान ने उन पर अधर्म नहीं किया परन्तु अधर्म शैतानों ने किया । कि वह लोगों को जादू टौना सिखाया करते थे और वह जो बाबल में हारूत और मारूत फ़रिश्तों को पहुंचाई गई थी और वह किसी को न बतलाते जब लों उससे न कह देते कि हम तो परीक्षा करने को हैं, (तू इस विधान का उल्टा प्रयोग करके) कहीं पापी न हो जाइयो इस पर भी उन से ऐसी बातें सीखते जिसके कारण स्त्री पुरुष में वियोग करादें परन्तु बिना अल्ला की आज्ञा के वह अपनी इन बातों से किसी को हानि नहीं पहुंचा सकते, और यह लोग उन से ऐसी ऐसी बातें सीखते जिनसे इनको हानि पहुंचती और उनको लाभ न पचहुंता और जान चुके थे कि इन बातों का खरीदार हुआ वह परलोक में अभागी है, और निस्संदेह क्याही बुरा मोल है जिसके बदले इन्होंने अपने जीवनों को बेचा, कहीं इनको इतना ज्ञान होता (तो कैसा अच्छा होता)

७ और यदि वह विश्वास करते और विवेकी बनते तो अल्ला की ओर से (इनके लिये) फल था श्रेष्ठ यदि इनको समझ होती ।

तेरहवां रुकू । आयतें ९+१०३=११२

१ या ऐयुहल्लज़ी-न आ-म-नू ला तक़ूलू रा-इना व क़ूलुन्ज़ुर्ना वस्मऊ, व लिल् काफ़िरी-न अ़ज़ाबुन् अलीमुन् (अ़लीम्)

२ मा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़-रू मिन् अःलिल् किता-बि व लल्मुश्रिकी-न ऐंयुनज़्ज़-ल अ़लैकुम् मिन् ख़ैरिम् मिर्रब्बिकुम्, वल्ला-हु यख़्तस्सु बि रह़्मतिही मैंयशाउ (यशा), वल्ला-हु ज़ुल्फ़ज़्लिल् अ़ज़ीमि (अ़ज़ीम्)

३ मा नन्सख़् मिन् आ-य-तिन् औ नुन्सिहा ना-ति बिख़ैरिम् मिन्हा औ मिस्लिहा, अलम् तअ़्लम् अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुन् (क़दीर्)

४ अलम् तअ़्लम् अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समा-वा-ति वल् अर्ज़ि (अर्ज़्), व मालकुम् मिन्दूनिल्ला-हि मिंव्वली यिंव्व ला नसीरिन् (नसीर्)

५ अमृतुरीदू-न अन् तस्अलू रसू-लकुम् कमा सुइ-ल मूसा मिन् क़ब्लु (क़ब्ल्)

१ मुसल्मानो (पैग़म्बर को) " रा-इना " कह कर संबोधन न किया करो परन्तु *"उंज़ुर्ना" कहा करो और सुना करो और अविश्वासियों के लिए घोर दुःख है

२ पुस्तक वालों और मुश्रिकों में से जो लोग (इस्लाम के) अविश्वासी हैं उनका जी नहीं चाहता कि तुम्हारे रब की ओर से तुम पर भलाई उतारी जावे और अल्ला जिस को चाहे अपनी कृपा से विशिष्ट कर लेता है और अल्ला बड़ा दानी है

३ (ऐ पैग़म्बर) हम कोई आयत निकम्मी कर दें या भुला दें तो उससे अच्छी या वैसी ही उतार (भी) देते हैं क्या तुम को ज्ञान नहीं कि अल्ला प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ रखता है

४ क्या तुमको ज्ञान नहीं कि आकाश और पृथ्वी का राज्य उसी अल्ला का है और अल्ला के अतिरिक्त तुम्हारा न कोई पालक है न सहायक

५ (मुसल्मानों) क्या तुम यह चाहते हो कि जिस प्रकार पूर्व (काल) में मूसा से प्रश्न

---

* जब हज़रत मुहम्मद अपने धर्म का व्याख्यान देते होते तो जनता में मुसलमान, यहूदी, ईसाई और अन्य सब प्रकार के लोग होते और कभी ऐसा होता कि किसी को कोई बात अच्छी प्रकार न सुन पड़ती तो उसको कहना पड़ता कि " फिर कहिये " - यहूद जो मुहम्मद साहब के बड़े विरोधी थे वह " रा-इ-ना " बोलते जिसके दो अर्थ है एक तो यह कि हम नहीं समझते हमारे लिये फिर कहिये दूसरा यह कि " हे मूर्ख अभिमानी " और यदि " इ " को किंचित खींच कर कह दिया तो अर्थ हो गया " हे हमारे गड़रिये या चरवाहे " मुसलमान लोग भी देखा देखी " रा-इ-ना " कहने लगे, यहूदियों को कटाक्ष करने का अवसर मिला तो अल्ला की ओर से मुसल्मानों को आज्ञा हुई कि रा-इ-ना की जगह "उज़ुर्ना" कहा करो जिसका भी वही अर्थ है कि "हमारे लिए ज़रा फिर कहिए"

व मैं य-त-बद्दलिल् कुफ़्-र बिल् ईमा-नि फ़क़द् ज़ल्-ल सवा३अस्सबी-लि (सबील्)

६ वद्-द कसीरुम् मिन् अ:लिल् किताबि लौ यरुद्दू-नकुम् मिम् बअ्दि ईमा-निकुम् कुफ़्फ़ारन् ह-स-दम् मिन् इन्दि अन्फ़ु-सि-हिम् मिम् बअ्दि मा तबैय-न लहुमुल् हक़्क़ु (हक़्क़्), फ़अ्-फ़ू वस्व-फ़-हू हत्ता यातियल्ला-हु बि अम्रिही (अम्रि:), इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुन् (क़दीर्)

७ व अक़ीमुस्स्वला-त व आ-तुज़्ज़का-त (त्), व मा तुक़द्दिमू लिअन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरि तजिदू-हु इन्दल्ला-हि, इन्नल्ला-ह बिमा तअ्-म-लू-न बस्वीरुन् (बस्वीर्)

८ व क़ालू लैंयद्ख़ुलल् जन्न-त इल्ला मन् का-न हूदन् औ नस्वारा, तिल्-क अमानीयुहुम् , क़ुल् हातू बुर्हा-न-कुम् इन् कुन्तुम् स्वादिक़ी-न

९ बला, मन् अस्ल-म वज्हहू लिल्ला-हि व हु-व मुह्स्विनुन् फ़ लहू अज्रुहू इन्-द रब्बिही (रब्बि:), व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व लाहुम् यह्ज़नू-न

किये गए थे (वैसे ही) तुम भी अपने रसूलों से *प्रश्न करो, और जो ईमान के बदले कुफ्र ग्रहण करे तो वह सीधे मार्ग से भटक गया

६ (मुसल्मानों !) बहुधा पुस्तक वाले, उन पर सत्यार्थ प्रकाश हुए पीछे भी, अपने आन्तरिक डाह के कारण चाहते हैं कि तुम्हारे विश्वास लाए पीछे फिर तुमको काफ़िर बनावें तो क्षमा करो और जाने दो यहां तक कि अल्ला अपनी (कोई और) †आज्ञा भेजे निस्संदेह अल्ला प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखता है

७ और नमाज़ पढ़ते ज़कात देते रहो और जो कुछ भलाई अपने लिए पहले से भेज दोगे उसको अल्ला के पास (उपस्थित) पाओगे निस्संदेह अल्ला जो कुछ भी तुम करते हो देख रहा है

८ और (यहूद और नस्वारा) कहते हैं कि यहूद और नस्वारा के सिवाय स्वर्ग में कोई नहीं जाने पावेगा, यह उनके (अपने) मन के ‡लड्डू हैं

९ (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो यदि सच्चे हो तो अपना प्रमाण प्रस्तुत करो परन्तु वास्तविक बात यह है कि जिसने अल्ला के समक्ष विश्वास पूर्वक सिर झुकाया और वह सुकर्मी भी है तो उसका प्रतिफल उसके रब के पास है और न उन पर भय और न उनको शोक होगा

* यहूदी मूसासे कभी कहते कि "हमें ख़ुदा को ला दिखाओ" कभी कहते कि अन्य जातियां मूर्ति पूजती हैं हमारे वास्ते भी एक मूर्ति बनादो इसी प्रकार मुसल्मान भी मुहम्मद साहब से प्रश्न करते उसका निषेध किया है।

† "आज्ञा" से मतलब धर्म युद्ध (जहाद) है।

‡ "मन के लड्डू" शाब्दिक अर्थ तो (मन मानी) इच्छाएं है।

आर्य समाज, हनुमान रोड
पुस्तक सं० 1227

चौधवां रुकू । आयत ९+११२=१२१

१ व क़ा-लतिल् यहूदु लै-स-तिन्नस्वारा अ़ला शैइन् (शै) व क़ा-लतिन्नस्वारा लै-स-तिल् यहूदु अ़ला शैइन् (शै) व हुम् यत्लूनल् किता-ब (ब्), कज़ा-लि-क क़ालल्ल-ज़ी-न ला यअ्-ल-मू-न मिस्-ल क़ौलिहिम्, फ़ल्ला-हु यह्कुम् बै-न-हुम् यौमल् क़िया-म-ति फ़ी मा कानू फ़ीहि यख़्तलि-फ़ू-न

२ व मन् अज़्लमु मिम्मम्-मनअ़ मसा-जिदल्ला-हि ऐंयुज़्क-र फ़ीहस्मुहू व सआ़ फ़ी ख़रा-बिहा उला३इ-क मा का-न लहुम् ऐंयद्ख़ुलूहा इल्ला ख़ा-इफ़ी-न (न्), लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युन् व लहुम् फ़िल् आ-ख़िर-ति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीमुन् (अ़ज़ीम्)

३ व लिल्लाहिल् मश्रिक़ु वल् मग़्रिबु (ब्), फ़ ऐनमा तुवल्लू फ़ सम्-म वज्हुल्ला-हि (ला:), इन्नल्ला-ह वा-सिउ़न् अ़लीमुन् (अ़लीम्)

४ व क़ालुत्तख़ज़ल्लाहु व-ल-दन् सुब्हा-नहू (न:), बल्लहू मा फ़िस्समा-वा-ति वल् अर्ज़ि (अर्ज़्), कुल्लुल् लहू क़ा-नितू-न

५ बदीउ़स्समा-वा-ति वल् अर्ज़ि (अर्ज़्), व इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़ इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़ यकूनु (यकून्)

१ और यहूद कहते हैं नस्वारा किसी मार्ग पर नहीं है और नस्वारा कहते हैं यहूद किसी मार्ग पर नहीं हैं और वह सब पुस्तक के पढ़ने वाले भी हैं, इसी प्रकार इन्हीं की सी बातें वह भी कहा करते हैं जो (मुश्रिक हैं और ईश्वराज्ञा इत्यादि को) कुछ नहीं जानते तो अल्ला कयामत के दिन इन में उसका फ़ैसला करेगा जिस बात में यह लोग झगड़ रहे हैं

२ और उससे अधिक अन्यायी कौन जो अल्ला की मस्जिदों में उसका नाम जपे जाने को रोके और उनके उजाड़ने का प्रयत्न करे यह लोग इस योग्य नहीं कि उनमें आने पावें परन्तु डरते (डरते) इन के लिए इस लोक में अपमान है और इनके लिए परलोक में (भी)

३ और अल्ला ही का पूर्व है और पश्चिम तो जिस ओर *मुख कर लो उधर ही को अल्ला का मुख है निस्संदेह अल्ला बड़ा उदार और ज्ञानी है

४ और कहते हैं कि अल्ला संतान रखता है (पर) वह (इस व्याधि से) पवित्र है परन्तु उसी का है जो आकाश और पृथ्वी में है सब उसके आधीन हैं

५ आकाश और पृथ्वी का (वही बिना नमूने या आदर्श के) उत्पादक है और जब किसी कार्य का करना ठान लेता है तो बस उसको कह देता है " हो " और वह हो जाता है

* "मुख झुकाया" शाब्दिक अर्थ है।

६ व क़ालल्लज़ी-न ला यअ्-ल-मू-न लौला युक-ल्लिमुनल्ला-हु औ तातीना आयतुन् (आयः), कज़ा-लि-क क़ालल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिस्-ल क़ौलिहिम् , तशा-ब-हत् क़ुलूबु हुम् , क़द् बैयन्नल् आ-या-ति लि क़ौमी यूक़िनू-न

६ और जो नहीं जानते वही कहते हैं कि अल्ला हमसे बात क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई चिन्ह क्यों नहीं आता इसी प्रकार जो लोग इन से पूर्व हो चुके हैं इन ही जैसी बातें वह भी कहा करते थे इन के हृदय एक ही प्रकार के हैं जो लोग विश्वास रखते हैं उनको हम चिन्ह स्पष्ट रूप से दिखाँ चुके

७ इन्ना अर्सल्ना-क बिल् हक़्क़ि बशीर न् व नज़ीरन् व ला तुस्अलु अ़न् अस्हाबिल् जही-मि (जहीम्)

७ (ऐ पैग़म्बर) हमने तुमको सत्य (धर्म) के साथ शुभ सूचना देने और भय सुनाने को भेजा है और तुम से नार्किकों की कुछ पूछ ताछ नहीं होगी

८ व ल तर्ज़ा अ़न्कल् यहूदु व लन् नस्वारा हत्ता तत्तबि-अ़ मिल्ल-त-हुम् क़ुल् इन्-न हुदल्ला-हि हुवल् हुदा, व लइ-नित्तबअ्-त अ:वा-अ-हुम् बअ्द ल्लज़ी जा-अ-क मिनल् इ़ल्मि मा ल-क मिनल्ला-हि मिंव्वलीयिंव्वला नस्वीरिन् (नस्वीर्)

८ और (ऐ पैग़म्बर) न तो यहूदी तुम से कभी प्रसन्न होंगे और न नस्वारा ही जब तक तुम उनका ही मत न स्वीकारो क्योंकि जो मार्ग अल्ला दिखावे वही मार्ग है और यदि तुम इसके पीछे कि तुम्हारे पास ज्ञान (कुरान) आ चुका है इनकी इच्छाओं पर चले तो तुमको अल्ला से (बचाने वाला) न कोई रक्षक और न कोई सहायक

९ अल्लज़ी-न आ-तै-ना-हुमुल्किता-ब यत्लू-नहू हक़्क़ तिला-वतिही (तिः), उला३इ-क योमिनू-न बिही (बिः), व मैं यक्फ़ुर् बिही फ़ उला३इ-क हुमुल् ख़ासिरू-न

९ जिन लोगों को हमने पुस्तक दी है वह उसको पढ़ते हैं जैसा उनका पढ़ना उचित है वही उस पर विश्वास लाते हैं और जो उससे अमान्यता रखते हैं वही लोग घाटे में हैं

पंद्रहवां रुकू । आयत ८+१२१=१२९

१ या बनी इस्रा-ई-लज़्कुरू निअ़्मति-यल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तु-कुम अ़लल् आ़लिमी-न

१ ऐ इस्राईली संतान मेरी वह कृपाएं स्मरण करो जो मैंने तुम पर कीं और यह कि मैंने तुमको सारे संसार से उच्चता प्रदान की

२ वत्त-क़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न् नफ़्सिन् शैअंव्व ला युक़्बलु मिन्हा अ़द्लुंव्व ला तन्फ़ड़-हा

२ और उस दिन से उसे जब कोई जीव किसी जीव के कुछ काम न आवे न उसकी ओर बड़ा दुःख है

शफ़ा-अ़तुंव्व ला हुम् युन्स्व-रू-न

इस आयत नं० २ का अनुवाद पृष्ठ ३२ पर अशुद्ध है इस प्रकार पढ़ें:—

२ और उस दिन से डरो जब कोई जीव किसी जीव के कुछ काम न आवे न उस (की ओर) से कोई बदला स्वीकार किया जावे और न सिफ़ारिश उसको लाभ दे और न उस को सहायता पहुंचे ।

३ व इज़िब्तला इब्राही-म रब्बुहू बि-क लि-मा-तिन् फ़ अतम्-म हुन्-न(हुन्न), क़ा-ल इ ी जा-इ-लु-क लिन्ना-सि इमामन् (इमामा), क़ा-ल व मिन् ज़ुर्रीयती, क़ा-ल ला यना-लु अ़:दि ज़्ज़ालिमी-न

३ जब इब्राहीम की उसके रब ने कुछ बातों में परीक्षा ली और उसने उनको पूरी कर दिखाई (तो अल्ला ने) कहा कि मैं तुझको लोगों का आचार्य्य बनाने वाला हूं (इब्राहीम ने) कहा और मेरी सन्तान में से ? कहा मेरी प्रतिज्ञा में वह सम्मिलित नहीं हैं जो अन्यायी होंगे

४ व इज़् ज-अ़ल्नल् बै-त मसा-ब-तल् लिन्ना-सि व अम्नन् (अम्ना), वत्त-ख़िज़ू मिम् मक़ा-मि इब्राही-म मुस्वल्लन् (ल्ला), व अ़हिद्ना इला इब्रा ही-म व इस्मा-ई़ल अन् त्व:हि-र बैति-य लित्ता३इ-फ़ी-न वल् आ़किफ़ी-न वर्रुक्क-इ़स्सुजूदि (सुजूद)

४ और जब हमने काबा गृह को लोगों के एकत्र होने का और रक्षा का स्थान बनाया और (आज्ञा दी कि) इब्राहीम के स्थान को नमाज़ का स्थान नियत रखो और इब्राहीम और इस्माईल से कहा कि हमारे (इस) घर को परिक्रमा करने वालों रखवालों और नमने और माथा टेकने वालों के लिये पवित्र रखो

५ व इज़् क़ा-ल इब्राही-मु रब्बिज्-अ़ल् हाज़ा ब-ल-दन् आमिनंव्वर्ज़ुक़् अह्-ल-हू मिनस्स-म-रा-ति मन् आ-म-न मिन्हुम् बिल्ला-हि वल् यौमिल् आ-ख़िरि (आख़िर्),क़ा-ल व मन् क-फ़-र फ़ उमत्तिउ़-हू क़लीलन् सुम्-म अज़्त्व-र्रुहू इला अ़ज़ा-बि-न्ना-रि (नार्),व बे-सल्मस्वी-रु (मस्वीर्)

५ और जब इब्राहीम ने प्रार्थना की कि ऐ मेरे रब इसको कुशल क्षेम का नगर बना और उनको फल फलारी खाने को दे जो इसके बसने वालों में से अल्ला और अंतिम दिन (परलोक) पर विश्वास लाए, (अल्ला ने) कहा जो (इन बातों का अविश्वासी होगा उसको भी कुछ समय के लिये लाभ उठाने दूंगा फिर उसको क़ैद करके नर्क की पीड़ा में प्रविष्ट करूंगा और (वह) बुरा ठिकाना है

६ व इज़् यर्फ़उ़ इब्राहीमुल् क़वा-इ-द मिनल् बैति व इस्मा-ई़-लु (लू),

६ और जब इब्राहीम और इसमाईल काबा गृह की नीव उठा रहे थे (और प्रार्थना करते जाते

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना, इन्न-क अन्त
स्समीउल् अ़लीमु (अ़लीम्)

थे कि) ऐ हमारे रब हमसे (यह सेवा) स्वीकार कर तू ही सुनने वाला (और) जानने वाला है

७ रब्बना वज्-अ़लना मुस्लिमै-नि ल-क
व मिन ज़ुर्रीय तिना उम्मतम् मुस्लि
-म-तल्ल-क (लक्), व अरिना
मना-सि-क-ना व तुब् अ़लैना, इन्न
-क अन्तत्तौवा-बुर्रही-मु (रही़म्)

७ और ऐ हमारे रब हमको अपना आज्ञाकारी बना और हमारे बंश में एक सम्प्रदाय (उत्पन्न) कर जो तेरा आज्ञाकारी हो और हमको हमारी उपासना की विधियां बता (अथवा यात्रा की रीतियां बता) और हमको क्षमा कर निस्संदेह तू ही बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है

८ रब्बना वब्अ़स् फ़ीहिम् रसूलम्
मिन्हुम् यत्लू अ़लैहिम् आ-या-ति-क
व युअ़ल्लिमुहुमुल् कि-ता-ब वल्
हि़क्म-त व युज़क्कीहिम् ,इन्न-क अन्त
ल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीमु (ह़कीम्)

८ और ऐ हमारे रब इन (मक्के वालों) में इन ही में से एक रसूल भेज कि इनको तेरी आयतें पढ़ कर सुनावे और इनको अल्ला की पुस्तक और विद्या सिखावे और इनका सुधार करे निस्संदेह तही है सामर्थ्यवान और विद्वान

सोलवां रुकू । आयत १२+१२९=१४१

१ व मैं यर्ग़बु अ़म्मिल्लति इब्राही-म
इल्ला मन् सफ़ि-ह नफ़्-सहू (सः),
व ल-क़-दिस्त्वफ़ैना-हु फ़िद्दुन्या,
व इन्नहू फ़िल् आ-ख़ि-रति लमि-न
स्स्वालिही़-न

१ और कौन है जो इब्राहीम के मत से घृणा करे परन्तु वही जिसकी बुद्धि मारी गई और निश्चय हमने उसको संसार में विशिष्ठ कर लिया था और अन्त में (परलोक में) वह सुकर्मियों में होगा

२ इज़् क़ा-ल लहू रब्बुहू अस्लिम्,
क़ा-ल अस्लम्तु लिरब्बिल् आ़-ल
मी-न

२ जब उससे उसके रब ने कहा कि (हमारी) आज्ञा मानो (तो उत्तर में) कहा कि मैं सारे जगत के पालन कर्ता का आज्ञाकारी हुआ

३ व वस्स्वा बिहा इब्राही-मु बनी-हि
व यअ़्-क़ू-बु (ब्), या बनी-य इ
न्नल्लाहस्त्वफ़ा लकुमुद्दी-न फ़ला
तमूतुन्-न इल्-ल व अन्तुम् मुस्लिमू-न

३ और इसी की इब्राहीम अपने पुत्रों को आज्ञा कर गया और याकूब (भी) कि बेटा अल्ला ने इस मत (इस्लाम) को तुम्हारे लिये निर्वाचित किया है सो न मरना तुम सिवाय मुसल्मान के (अर्थात् मुसल्मान रहते हुए ही मरना

४ अम् कुन्तुम् शु-ह-दा-अ इज़् ह़-ज़्र
-र यअ़्-क़ू-बल् मौतु, इज़् क़ा-ल
लि-बनी-हि मा तअ़्-बु-दू-न मिम्

४ (ऐ यहूद) भला क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब याकूब के समक्ष मृत्यु आ विराजमान हुई (और) जब (उसने) अपने पुत्रों से

बअ़्दी, क़ालू नअ़्बुदु इला-ह-क व
इला-ह आबा-इ-क इब्राही-म व इस्मा
-ई़ल व इस्ह़ा-क़ इ-ला-हंव्वा-ह़िदन्
(दा),व नह़्नु लहू मुस्लिमू-न

कहा कि मेरे पीछे क्या पूजोगे उन्हों ने उत्तर दिया कि तेरे उपास्य देव की और तेरे पुरुषा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ के अद्वितीय उपास्यदेव की और हम उसी के आज्ञाकारी है

५ तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़लत्, लहा
मा क-स-बत् व लकुम् मा कसब्तुम्,
व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ़्
-म-लू-न

५ (ऐ यहूद) यह लोग थे कि (अपने समय में) हो चुके उनका किया इनको और तुम्हारा किया तुमको और तुम से उसकी पूछ ताछ नहीं होगी जो वह कर गये हैं

६ व क़ालू कूनू हूदन् औ नस्वारा तः
-तदू, क़ुल् बल् मिल्-ल-त इब्राही-म
ह़नीफ़न् (ह़नीफ़ा), व मा का-न
मिनल् मुश्रिकी-न

६ और (मुसलमानों से) कहते हैं कि यहूदी और ईसाई बन जाओ तो सीधे मार्ग पर आओ (ऐ पैग़म्बर) कहो परन्तु हम इब्राहीम के संप्रदाय के हैं जो एक ही पक्ष का था और मुश्रिकों में न था

७ क़ूलू आ-मन्ना बिल्ला-हि व मा उन्ज़ि
-ल इलैना व मा उन्ज़ि-ल इला
इब्राही-म व इस्मा-ई-ल व इस्ह़ा-क़
व यअ़्-क़ू-ब वल् अस्बा-त्वि व मा
ऊति-य मूसा व ई़सा व मा ऊति
यन्नबीयू-न मिर्रब्बि-हिम, ला नुफ़र्रि
क़ु बैन अ-ह़-दिम् मिन्हुम् ,व नह़्नु
लहू मुस्लिमू-न

७ (मुसल्मानों ! तुम यह) उत्तर दो कि हम तो अल्ला पर विश्वास लाए हैं और जो हम पर उतरी और जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याकूत और उसकी सन्तान पर और जो मिली मूसा और ईसा को और जो पैग़म्बरों को उनके रब की ओर से मिली हम इन पैग़म्बरों में से किसी एक में भी भेद नहीं समझते और हम उसी अल्ला के आज्ञाकारी हैं

८ फ़ इन् आ-म-नू बिमिस्लि मा आम
न्तुम् बिही फ़-क़-दिःतदौ, व इन्
तवल्लौ फ़ इन्नमा हुम् फ़ी शिक़ा
क़िन् (शिक़ाक़्), फ़-स-यक्फ़ी
-क-हुमुल्ला-हु (ल्लाः), व हुवस्समी
उ़ल् अ़लीमु (अ़लीम)

८ तो यदि तुम्हारी भांति यह लोग भी उन्हीं बस्तुओं पर विश्वास ले आवें जिन पर तुम लाए हो तो बस सुधे मार्ग पर आ गये और यदि पलटे तो बस वह हठ पर हैं तो (ऐ पैग़म्बर अल्ला तेरी से उनको बहुत है और वह सुनता और जानता है

९ स्विब्ग़-तल्ला-हि (ल्लाः), व मन्
अह़्सनु मिनल्ला-हि स्विब्ग़-तन् (ग़ः)
व नह़्नु लहू आ़बिदू-न

९ (मुसल्मानो ! कहो) हमने लिया रंग अल्ला का औरअल्ला (के रंग) से किसका रंग अच्छा होगा और हम तो उसी की उ़पासना करते हैं

१० क़ुल् अतुहा३ज्जू-नना फ़िल्ला-हि वहु-व रब्बुना व रब्बुकुम् , व लना अअ्-मा-लुना व लकुम् अअ्-मा-लुकुम् , व नह़्नु लहू मुख़्लिसू-न

१० (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि क्या तुम अल्ला के (सम्बन्ध में) हम से झगड़ते हो (अथवा वितंडा करते हो) और वह हमारा रब है और तुम्हारा रब है और हमको हमारे कर्म और तुमको तुम्हारे कर्म और हम केवल उसी के है

११ अम् तक़ूलू-न इन्-न इब्राही-म व इस्मा-ई-ल व इस्हा-क़ व यअ्-क़ू-ब वल् अस्-बा-त्व कानू हूदन् औ नस़ारा, क़ुल् अअन्तुम् अअ्-ल-मु अमिल्ला-हु (ल्लाः) व मन् अज़्ल-मु मिम्मन् क-त-म शहा-द-तन् इन्दहू मिनल्ला-हि (ल्लाः), व मल्ला-हु बि ग़ा-फ़िलिन् अ़म्मा तअ्-म-लू-न

११ क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और ईस्माईल और इस्हाक और याकूब और उसकी सन्तान यहूदी या ईसाई थे (ऐ पैग़म्बर इन से) कहो कि तुम विशेष जानते हो या अल्ला और उससे अधिक अन्यायी कौन होगा जिसके पास अल्ला की ओर से साक्षी (उपस्थित) हो और वह उसको छिपावे, और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्ल उससे अनभिज्ञ नही

१२ तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़लत्, लहा मा क-स-बत् व लकुम् मा कसब्तुम्, व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ्म-लू-न

१२ यह लोग थे कि (अपने समय में) हो चुके उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुमको और जो कुछ वह कर गए तुमसे उसकी पूछ ताछ नहीं होगी

शुद्धाशुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
सप्त संकेत	११	" आ. ए, आ "	" आ ए, ओ "
"	२३	उज़ाबुन्	अज़ाबुन्
सूरए फ़ातिहा	६	नअ़बुदु	नअ़्बुदु
पृष्ठ/पंक्ति	१०/१४	ख़-त्व-मल्ला-न्हु	ख़ त-मल्ला-हु
११	२१	मुब्सिरू न	युब्सिरू-न
११	२५	ज़ुलमातुन्	ज़ुलुमातुन
१४	४	यु-फ् सिदू	युफ़् सिदू
१६	१४	(अस्पष्ट)	बिस्स्वत्रि
२०	१४	ासिरी-न	ख़ासिरी-न
२१	२१	ब-र-तु	ब-क़-रतु
२५	१५	यस्तफ़् तिहूं-न	यस्तफ़् तिहू-न

११/८, ११/१४, १२/ ७, १२/१५, १६/१३, १६/१८, १७/७, १७/१९, १३/ ७, १३/१५, १४/६, १४/ ७, १८/६, १९/२७, २०/८, २०/१५ १४/१९, १५/५, १५/२०, १६/७, २३/१२, २४/२३, इन पृष्ठ और पंक्तियों में "ह्" के स्थान में ख़ पढ़ें ।